

मोनक पौती

आशापूर्णा देवी

मैथिली अनुवाद

कमला चौधरी

मोनक पौती

बङ्गला साहित्यक चर्चित कृति



ज्ञानपीठ पुरस्कारसँ सम्मानित बङ्गला साहित्यकार

आशापूर्णा देवी

मोनक पौती

(उपन्यासिका)

मैथिली अनुवाद

कमला चौधरी



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

MONAK PAUTI : Maithili translation by Kamla Chaudhary of Gyanpith awarded authoress Aashapurna Devi's Bengali prominent novelette 'Moner Jhanpi, Pallavi Parkashan, Berma/Nirmali, Bihar, 2022, ₹ 200
ISBN : 978-93-93135-12-4

प्रथम संस्करण : 2022
मूल्य : ₹ 200 (दू सय टाका) मात्र

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452
वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

आवरण सज्जा : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452
मुद्रक : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)

आमुख

श्रीमती आशापूर्णा देवी मूलत: बङ्गलाक सक्षम आ अत्यधिक संवेदनशील कथा- लेखिका छथि। हुनक अनेकानेक रचना अन्य भाषा सभमे निरन्तर अनूदित-प्रकाशित होइत रहलनि अछि। परिणामत: हुनक नाम देशक प्राय: सभ भाषा-क्षेत्र आ सभ अंचलमे दिनानुदिन अधिकाधिक लोकप्रिय आ समादृत छनि।

'मोनक पौती' उपन्यासिका तत्कालीन समाजमे बाल-विधवाक अस्तित्व ओ मनोदशाक भव्य ओ यथार्थपरक चित्रांकन अछि। एकर नायिका शशिताराक नैहरक प्रति स्नेह आ सासुरक प्रति कर्त्तव्यबोध परस्पर टकराइत छैक, द्वन्द्वक स्थिति हुनक पछोड़ धयने रहैछ, मुदा अन्तत: कर्त्तव्यबोधेक विजयमे नारी मोनक औदार्य आ सशक्तिकरण प्रतिबिम्बित होइछ जे एहि उपन्यासिकाक श्रेष्ठतम उपलब्धि थिक। बंगालक भद्र समाजक वैधव्यग्रस्त महिलाक हू-ब-हू चित्र बुझना जाइत अछि जेना मिथिलेक परिवेशपर आधारित हो।

हिनक 'मोनेर झाँपी' उपन्यासिकाक कथानकक विशिष्टता कही अथवा लेखिकाक सिद्धहस्त लेखनीक जादू जे सम्पूर्ण कथा एकदम सत्य लगैत अछि। एक-एक वर्णनमे उपन्यस्त पात्र सभक मनोगत गेंठक विनियोज्य शब्दांकन रचनाधर्मिताक केन्द्र-बिन्दु अछि। पढ़बा काल एहन लगैत अछि जेना सम्पूर्ण घटना-क्रम आँखिक आगू घटित भऽ रहल हो।

स्वभावत: ई उपन्यासिका नहि केवल मिथिला ओ बंगालक सामाजिक, आर्थिक ओ सांस्कृतिक ऐक्यक प्रतीक थिक अपितु सविशेष रूपमे भारतवर्षक अनेकतामे एकताक दृष्टान्त प्रस्तुत करैत अछि, भाषिक आदान-प्रदानक माध्यमे राष्ट्रीय समन्वयक मार्गकेँ प्रशस्त

करबामे सक्षम अछि।

नारी मनोविज्ञानकेँ जाहि कुशलतासँ एहि उपन्यासिकामे चित्रित कयल गेल अछि से लेखिकाक कुशल लेखनीक पुष्टि करैछ। कथाक प्रवाह मोन-प्राणकेँ प्रभावित ओ द्रवित करैत कतहु दूर धरि लऽ जाइत अछि।

खास बात ई जे बङ्गला आ मैथिलीमे लिपिगत समानता तँ अछिए, खान-पान, रहन-सहन आदिमे सेहो बहुत घनिष्टता अछि। मिथिलामे शशितारा सन चरित्र गाम-गाममे एखनो भेटैत छथि। यैह कारण अछि जे एहि उपन्यासिकाकेँ पढ़ैत काल उत्कट इच्छा भेल जे एकर अनुवाद मैथिलीयोमे होयबाक चाही।

-कमला चौधरी

मो. +91 9905029611

मोनक पौती

खबरि अछि जोरगर। एकरा-ओकरा कानमे कहबा जोगर। फूलपुरक सभ घरमे आगि जकाँ समाचार पसरि गेल।

चट्टोपाध्यायक शशितारा सासुर जा रहल छथि। एकक ठोरसँ दोसराक कानमे जखन ई बात चलल तँ चलिते रहल।

की बात भऽ गेलै?

सासुर?

सासुरक अर्थ कतयसँ अछि?

लोक यैह बिसरि गेल छल जे शशितारा कें कोनो सासुरो छनि। नव वयसक लोककेँ तँ इहो नहि बूझल छनि जे हुनकर कहियो विवाहो भेल छलनि। बूढ़-पुरानक अतिरिक्त फूलपुरक सभ लोक शशिताराक एकेटा रूप देखने अछि। बुढ़िया सभहक कहब अछि जे शशिताराक रंग कहियो सुच्चा सोन सदृश छलनि। मेघ सन केश। केशकेँ तँ शशितारा एक बेर प्रयाग जा कऽ त्रिवेणीक कछेरपर मूड़न करबा आयल छलीह आ रंगकेँ स्वाहा कैलकनि अछि- अचार, अमौट, अदौड़ी, आमिल आ पैघ-पैघ निर्जला व्रत सभ।

बहुत दिनसँ शशिताराक जे मूर्त्ति लोक देखैत आबि रहल अछि, ओ अछि ताड़ सन नाम रुखायल-सुखायल आकृति। माथक केश कैंचीसँ कतरल, रौदमे जरल ताम सन रंग आ कटगर छविवला मुँह। तीक्ष्णता नाके-नक्शपर नहि ठोरोपर व्याप्त छनि।

चट्टोपाध्याय परिवारक बेटी शशितारा‌कें आब बहिन कहयवला साइते केओ बचल अछि। गाम भरिमे हुनका लोक 'अजिया' कहैत छनि। एहिसँ एकटा लाभ होइत छैक जे सम्बन्ध फरिछयबाक समस्या नहि रहैए। कम वयसक लोक सोझाँ पड़लापर 'पीसी' कहैत छनि मुदा पाछाँ 'अजिया' शब्द प्रयोग करैत अछि।

शशि अजियाकें रेशमीक अतिरिक्त केओ सूती कपड़ा पहिरने नहि देखलक। भोर-साँझ हुनक शरीरपर रेशम अथवा तसर रहैत छनि आ एकर विकल्प छनि अंगोछ। राति कऽ जखन किछु घण्टा ओ ओछाओनपर रहैत छथि, ओहि समय ओ अंगपोछेसँ काज चलबैत छथि।

एहि युगमे ई बात आब नहि रहल जे विधवा होइतहि सभ किछु उतारि भिखमंगाक वेश अपना लेल जाय, मुदा शशिताराक जमानामे किछु एहने नियम छल। छल, किएक तँ आइसँ सत्तर वर्ष पहिलुक जमाना छल ओ।

हुनक विवाह ओही साल भेल छलनि। नौ वर्षक आयुमे विवाह आ वैधव्य दुनू काज सम्पन्न कऽ शशितारा देवी अपन नैहरमे आसन जमौलनि। तहियासँ आइ धरि दू-एक बेर तीर्थयात्राक अतिरिक्त ओ फेर कहियो कतहु नहि गेलीह।

शशिताराक विवाह जहिया भेल छलनि, ओहि जमानामे हुनक पितामह अघोर चट्टोपाध्याय जीवित छलाह। वैह अघोर चट्टोपाध्याय, जिनका भाग्यसँ प्रजाजन अपन पितृ-परिचय सेहो बिसरि जाइत छल। ई वैह अघोर चट्टोपाध्याय छथि जिनका लेल आइयो कहल जाइत अछि जे ओ बड़द आ बाघकें एके डण्टासँ हँकैत छलाह।

पहिल पोती शशिताराक गौरीदान नौ वर्षक आयुमे कऽ बैसल छलाह, अघोर चट्टोपाध्याय। बड़ चिन्ता छलनि हुनका जे बेटी बेसी दिन

कुमारि रहली तँ हुनक पुरखाकेँ नरक पठा कदाचित् हुनक नाक नहि कटा दैनि।

मुदा शशि अपन प्रताप उनटा दिस लगौलनि। पुरखाकेँ नरक पठयबाक बदला वरकेँ, विवाहक साल पूरा होयबाक पूर्वहि स्वर्ग पठा देलथिन। जखन खबरि आयल छल तँ शशितारा फूलपुरमे छलीह। टोला-महल्लामे बुलल फिरथि, दादीक अचारक बुइयामपर टुटि पड़थि, पोखरिकेँ हेलि कऽ एहि पारसँ ओहि पार चल जाथि। ताहिपर माय, पितिआइनिक दसो बेर डाँटनि सुनथि जे केहन जंगली छौंड़ी अछि! दोसर घर जा कऽ हमरा सभकेँ उलहन सुनबाओत।

जाहि समय खबरि आयल छल, शशितारा गाछपर चढ़ि डंटासँ टिकुला तोड़ि रहल छलीह। कहल जाइत अछि शशिताराक पीसी शशितारकेँ पिटियो कऽ गाछपर सँ उतारि नहि सकल छलीह। बहुत कालक बाद जखन हुनका उतारि पोखरिपर लऽ जा पीसी कानि-कानि कऽ हुनक वैधव्यक क्रिया-कर्म करबा रहल छलीह, तँ शशि कहने छलथिन- 'जे भेल, बहुत भेल। जखन-तखन कहैत रहैत छलीह जे दोसराक घर जा कऽ तोहर कोन दशा होयतैक। आब देखबौ कोना कहैत छैँ। आब तँ दोसराक घर कहियो जाय नहि पड़त ने! दोसराक घर हमर औंठापर!'

शशिताराक नेनपनक बात आइ इतिहास बनि गेल अछि। एकटा कथा आओर अछि। बेटीक ऊपर आयल एहि दु:खसँ शशिताराक उनतीस वर्षीय पिता अभय चट्टोपाध्याय एतेक विचलित भऽ गेल छलाह जे कहने रहथि- "ई विवाह, विवाह नहि। हम तँ कन्यादानो नहि कैने छलहुँ। हम शशिक फेरसँ विवाह करायब।"

पुत्रक बात सुनि पिता अघोर चट्टोपाध्याय कहने रहथिन- "बड़ नीक बात छह, मुदा किछु दिन रुकि जाह। हमरा मरय दैह, तखन एक

संग दूटा वर तकिहऽ। एकटा बेटी लेल आ एकटा अपन माय लेल। फूलपुरमे विधवा-विवाह प्रचलित करयबाक अखण्ड कीर्त्ति तोरे भेटतह।”

ई दुनू कथा मात्र कथा अछि, कारण जिनका आगू ई बात कहल गेल छल, ने ओ रहलाह आ ने वैह रहलाह जे ई बात कहने छलाह। आइ जे फूलपुरमे रहैत छथि, ओ सभ तँ होश अयलाक बादसँ शशिताराकेँ एहिना देखलनि अछि, जनलनि अछि। बाप रे! की प्रताप! की शेरनी सन स्वभाव! एकदम पितामह अघोर चट्टोपाध्याय सन स्वभाव पौलक अछि। दूर धरि पसरल कतेको पुस्तसँ समन्वित चट्टोपाध्याय परिवारक आइ शशितारे कर्णधार छथि, माथक मुकुट छथि।

चट्टोपाध्याय परिवारक मात्र किएक? कर्णधार तँ ओ पूरा फूलपुरक छथि।

दु:ख हो अथवा सुख, विपदा हो अथवा सम्पदा, बिमारी हो वा बेहाली, फूलपुरक लोक जखन कोनो समस्याक सोझाँ पड़ैत छथि तँ सभसँ पहिने हुनका अजिया मोन पड़ैत छनि। हुनके लग ओ सभ दौड़ल चल अबैत छथि। ओहो जँ सुनि लैत छथिन जे ककरो कोनो कष्ट छै तँ दौड़ल चल जाइत छथि। कोन फर्क पड़ैत छनि जे ओ के अछि? घुरती काल बस पोखरिमे एकटा डुबकीए तँ लगबय पड़ैत छनि। शशितारा फूलपुरक हृदय-यंत्र छथि। आओर यैह शशितारा आइ सासुर जा रहल छथि। जोगियाक पैघ पुतोहु ननीबाला आबि कऽ कानय लागलि। कहलकनि, ‘हमर नातिन दु:खित अछि। मरत की जीत के जानय ! एहने समय अहाँ जयबाक ठनलहुँ, अजिया?’

शशितारा कहलथिन- “अरे, हम कोनो डाक्टर की वैद्य तँ छी नहि। तोहर नातिन सहीमे दु:खित छौक। जँ ओकर आयु समाप्त भऽ गेल होयतैक तँ सिरमामे स्वयं ब्रह्मा आबि बैसि जयथिन, तइयो ओ नहि रुकत

आ जँ आयु होयतैक तँ यमराज स्वयं अयलोपर किछु नहि बिगाड़ि सकथिन। मुदा हँ, बिमारी-बेहालीमे पाइक आवश्यकता तँ होइतहि छैक, ले, एकरा राखि ले।"

बिनु छूने, ऊपरसँ ननीबालाक हाथपर शशितारा दसक तीनटा नोट धऽ देलथिन। गोड़ लागि, नोर पोछि, नोटकेँ खूटमे बन्हैत ननीबाला चलि गेलीह।

तखन सत्यचरण घोषाल अयलाह। ओहो नोर पोछैत चलि गेलाह। हुनका कचोट छलनि जे हुनक नातिनक विवाहक समय शशितारा फूलपुरमे नहि रहती। कहलथिन, 'अहीं हमर बुद्धि छी, शक्ति छी, पीसी। अहाँक बिना कोना की हेतै?'

हुनका नातिनक कुमारि भोजनक लेल एकटा रंगीन नूआ आ विवाहक लेल एक जोड़ी कर्णफूल दऽ शशितारा कहलथिन- "तोँहू की छह सत्यचरण? मनुक्खक कोन बुद्धि, ओकर शक्ति की! भगवानक नाम लऽ काजमे लागि जाह। देखिहऽ, कतेक नीकसँ सम्पन्न होयतह तोहर नातिनक विवाह।"

हाथमे एक कटोरी तेल लेने शोभाक माय दौड़ल अयलीह। बजली- "एकरा फूकि दियौ अजिया, अहाँ जखन एतय नहि रहब, तखन जँ हमर बेटाकेँ रद्द होयत तँ ओकरा देबैक।"

हँसि कऽ शशितारा कहलथिन- "तोँ सभ तँ तेना शोक मनायब शुरू कऽ देलह अछि जेना हम मरय जा रहल छी। तोँ हरिदासीसँ ई तेल किएक नहि फुकबा लैत छह? ओ एहि सभ बातमे माहिर अछि। बहुत तंत्र-मंत्र सिखने अछि ओ। हम तँ मात्र इष्टक नाम लऽ तेल फूकि दैत छियैक।"

शोभाक माय आकुल भऽ कहलथिन- "अहाँक आगू केओ नहि अजिया! हरिदासी पीसी ओतय जयबाक हमर मोन नहि होइत अछि।"

हारि मानि कऽ शशितारोकेँ तेल फूकय पड़ैत छनि। वृन्दावनक भतीजाकेँ घुरमी अबैत छैक। ओकरो लेल एकटा दवाइ बनौलनि अछि ओ। एहि दवाइक विशेषता अछि जे जँ ई बता देल जाय जे कोन चीजसँ की करबाक होइछ तँ एहि दवाइसँ फायदा नहि होइत छैक। तेँ सभ दिन जकाँ एहि दवाइकेँ ओ आइयो स्वयं बनौलनि।

प्रौढ़ा भतिजपुतोहुकेँ बेर-बेर सिखबैत छथि, चैतौनी दैत छथि। कहैत छथि- "हमरा एतय नहि रहबाक माने ई नहि जे घोड़ा बेचि कऽ सुतल रहब सब गोटे। जहिना-जहिना हम करैत छी, तहिना सभ काज करैत रहब। शनि आ मंगल कऽ सिद्धेश्वरीक मन्दिरमे भोग अवश्य पहुँचि जाइनि। हमर बेटाक हिस्साक माछ अपन बेटा सभकेँ नहि खुआ देब। दही पौरब नहि बिसरब। भोर कऽ बच्चा सभकेँ चिरैताक पानि आ आद-बूट अवश्य देबैक। जेठकी-छोटकी दियादिनी मिलि गप्पमे एतबा भोर नहि भऽ जायब जे गृहस्थी चौपट भऽ जाय। अँचार-अमौट रौदमे देब आ धोआयल वस्त्र पहिरि कऽ भण्डार घरमे पैर देब। तुलसी-चौरापर दीप रखैत-रखैत साँझ ने भऽ जाय। दिनुक रौद रहितहि शंख फूकि चाह पीबय नहि बैसि जायब।"

चलैत-फिरैत, उठैत-बैसैत उपदेश- "पाहुन सभ लेल राखल ओछाओनमे भूआ नहि लगबा लेब, रौद-निकलितहि बाहर रखबा देबै। साल भरिक खेरही-उड़ीद रखने जा रहल छी। सभटा खर्च नहि कऽ लेब। चूड़ा नहि कुटबा सकलहुँ। रौद निकलितहिँ जग्गू आ रामाकेँ बजबा कऽ कुटबा लेब। अपन-अपन शरीरक ध्यान राखब। दुखित भऽ हमर बेटा सभकेँ तंग नहि करब। परीक जे सम्बन्ध आयल अछि, ओकर ध्यान राखब। हुनका सभकेँ नियमित पत्र देबनि। विवाह अगहनसँ पहिने तँ होयत नहि। आ देखब, छौंड़ी रौदमे बेसी नहि बौआय। तिक्ख रौदमे बेसी बौआयत तँ रंग जरि कऽ छाउर भऽ जयतैक।"

भतीजाक दूटा बेटाक कनियाँ आयल छनि। हुनकोपर किछु

उपदेशक वर्षा करैत शशितारा कहैत छथिन- “देखू, अहाँक कोरमे छोट बच्चा अछि। साँझ कऽ आ बीच रातिमे भोजन जुनि करब। असलमे अहाँ सभ छी बड़ अहदी। नेनाक ताक-छेममे दिन निकलि जाइत अछि। हमरा एतय नहि रहलासँ बलाय टरल से सोचि हमर नन्दलालक मालिश नहि बन्द कऽ देब।”

एहन कतेको चेतौनी! असंख्य उपदेशावली।

छोटकी परपुतोहु एक बेर पुछने छलथिन- “कतेक दिन लेल जा रहल छथिन दादी जे एतेक उपदेश दऽ रहल छथिन? हिनक बात सुनि पुरना जमानाक तीर्थ-यात्री मोन पड़ैत अछि हमरा। हम सुनने छी जे पहिने लोक तीर्थ करय जाथि तँ इच्छा-पत्र लिखि कऽ जाथि।”

हँसी-मजाकमे शशितारा सेहो ककरोसँ पाछू नहि रहैत छथि। भतिजपुतोहु लेल साक्षात् चामुण्डा जरूर छथि मुदा परपुतोहुक संग खूब हँसैत-बजैत छथि। डाँट-दबार अवश्य करैत छथिन, उपदेशो झाड़ैत छथिन मुदा प्रेमसँ, हँसि-हँसि कऽ।

आइयो हँसलथिन। कहलथिन- “तीर्थे तँ जा रहल छी कनियाँ। जनैत नहि छी। पति-तीर्थ कतेक पैघ तीर्थ अछि।”

आँखि मटका परपुतोहु बजलथिन- “मानितहुँ जँ अहाँ वरक मुहोँटा देखने रहितियनि, बाबी! अहाँक तँ शुभ-दृष्टि सेहो नहि भेल छल।”

बात सत्य अछि।

ई कथा शशितारा स्वयं एहि पुतोहु सभकेँ कहने छलथिन। विवाहक दिन शुभ-दृष्टिक समय नहि जानि कोन जिद्द चढ़ि गेल छलनि जे ओ आँखि बन्द कऽ बैसल रहली, खोलबे नहि कयलनि। सभ केओ कतेक आग्रह कैलकनि, एक बेर आँखि खोलू, एक बेर ताकू, मुदा शशितारा ओतबे जोरसँ आँखि बन्द कऽ लेथि। हुनका तँ बस यैह जिद्द सवार छलनि, देखी, कोना खोलबैत अछि हमर आँखि।

बाबा अघोरनाथ चट्टोपाध्यायक दमसयबोक कोनो फल नहि भेल। आब कैलो की जा सकैत छल? विवाहक दिन बेदीपर बैसल बेटीकेँ थापड़ तँ मारल नहि जा सकैत छल। आइ ओहि बातकेँ स्मरण कऽ हँसि देलथिन शशितारा। बजलीह- “देखलहुँ नहि तँ की भेल? मनुक्खक शरीर तँ धारण कैने छी हम। जँ केओ साँपक जहर बिनु देखनहि खा लिअय तँ की ओकरा, ओहि जहरसँ मृत्यु नहि अबैछ?”

“बाबी! अहूँ की उपमा ताकि अनलहुँ। साँपक जहर !” परपुतोहु कहलकनि।

“बाते तेहने सन अछि।” शशितारा कहैत छथिन- “ओहि दिनुक ओ काँट, ओ दंश, ओहीसँ पूरा जीवन जरैत मरि रहल छी। लगैत अछि जेना विधवे भऽ जन्म लेने रही।”

“अच्छा बाबी, ई सत्य अछि जे अहाँक पिता अहाँक दोबारा विवाह करबय चाहैत रहथि? अहाँक बाबा नहि तैयार भेल छलाह?”

मुँह बिचका कऽ शशितारा कहैत छथिन- “बाबा तैयारे होइतथि तँ की? हम तैयार होइतहुँ?

“अहाँ तँ ओहि समय नान्हिटा बच्चा छलहुँ। अहाँक तैयार होयबाक नहि होयबाक मोजरे की छल, तहिया?”

“बच्चा रही तँ की? बेटी तँ हिन्दू घरक रही, ने कि ब्रह्मसमाजी अथवा इसाइ घरक?”

“ओतबे वयसमे अहाँ एतेक बुझय लागल छलियैक?”

“सुनू बात। थोड़-बहुत अकिल तँ मनुक्खकेँ जन्मे समयसँ होइत छैक, आ कि नहि?”

“माने ई जे अहाँ ई बुद्धि लऽ कऽ जन्म लेने रही जे अहाँ हिन्दू परिवारक बेटी छी?”

“ई तँ पता नहि जे की लऽ कऽ जन्म लेने रही आ की लऽ कऽ नहि। मुदा ई बात पक्का अछि जे बाबूजी की, हुनको पिता जँ जिद्द पकड़ितथि, तइयो शशि बाभनीसँ ई काज नहि करा सकैत छलाह।”

पुन: शशितारा हँसि कऽ प्रसंग बदलि देने छलथिन। कहने छलथिन- “छोड़ू, एहि सड़ल-गलल गप्पकेँ। जहिया बाबी नौ वर्षक छलीह, तहिया की भेल छल, की भऽ सकैत छल, ताहि पर शोध करबाक कोनो आवश्यकता नहि। ई की एहि जन्मक बात अछि? हमरा तँ लगैत अछि, ओ एकटा आओर जन्म, एकटा आओर जीवन...। मुदा अहाँक चलाकी हम खूब बुझैत छी। एहि बेकार बातकेँ पसारि, असल बातकेँ दबा देबाक अहाँ प्रयास कऽ रहल छी। जहिना-जहिना हम कहलहुँ अछि, तहिना-तहिना करब। नेनापर ध्यान राखब। ससुर, पितिया-ससुर सभहक सेवा करब। हम नजरि नहि रखैत छियनि तँ ओ पेट भरि नहि खाइत छथि। कनियाँ, ई तँ अहाँ जनिते छी।”

“बाबी, से तँ मानैत छी, मुदा अहाँ जकाँ छटाँक भरि जगहवला पेटमे हम सेर भरि वस्तु कोना भरब? ई हमरासँ नहि होयत।”

“होयत किएक नहि? सीखब। इहो नहि सिखलहुँ तँ स्त्री जन्मक सफलता कोना? जनैत नहि छी जे पुरुष खयबा काल नखरा कैल करैत छथि?”

शशिताराक परपुतोहु हुनकासँ सहमत नहि होइत छलीह। संसारमे एहि मतसँ सहमत होमयवाली स्त्री साइते केओ भेटय, किएक तँ एकर उनटे देखबामे अबैछ। मुदा बाबीक मतक ओ प्रतिवादो नहि करैत छलीह। हँसैत जरूर छलीह।

शशितारा जा रहल छथि, ई सुनि गामक सभ लोकक ठोरपर एकहि प्रश्न- “कतबा दिन लेल जा रहल छथि, कहिया घुमि कऽ अओतीह?”

एकर कारण ई अछि जे फूलपुरक जीवन-प्रवाहक ओ प्राण स्वरूप छथि। भगवानक शशि-ताराक बिना जेना रातिक आकाश निष्प्रभ रहैत अछि, तहिना एहि शशिताराक बिना फूलपुरक दशा किछु ओहने सनक होयबाक संभावना अछि।

शशितारा जँ एतय नहि रहती, तँ रातिक अन्तिम पहरमे मुख्य द्वार खोलि, थपड़ी बजबैत पोखरिक जलमे डुबकी लगबय के जायत?

गाममे जहियासँ 'चापाकल' लागल अछि, तहियासँ ग्रामवासी सज्जन लोकनिकेँ पोखरिसँ डर लागय लगलनि अछि। श्रीमती शशिताराक अतिरिक्त चट्टोपाध्याय परिवारक कोनो दोसर सदस्य आब पोखरिमे नहाय नहि जाइछ। ओहो भोरक अन्हारे पोखरिमे नहाइत छथि, कारण जे दिनुक पहिल स्नानमे बिना डुबकी लगौने, हुनका सन्तोष नहि होइत छनि। एकर बाद जतेक बेर नहाइत छथि, (दिनमे कतेको बेर ओ नहाइत छथि) से आँगनमे लागल चापाकलसँ काज चलबैत छथि।

जे छौंड़ा हुनका घर चरवाहक काज करैछ, ओकरा बजा कहैत छथिन- "रे छौंड़ा, कने एकरा चला तँ, अबैत-अबैत नहि जानि कथीपर पैर पड़ि गेल।"

शशिताराकेँ यैह बिमारी छनि- जखन-तखन एतय-ओतय जायब आ पैर तऽर की पड़ि गेल से सन्देह होइतहि नहायब। खीचैत-खीचैत मटका, रेशमक नूआ सब बदरंग..। चापाकल लगबासँ पहिने सभ बेर पोखरिमे डूब लगाबथि, आब ओहीसँ गुजारा करैत छथि।

जे हो, शशितारा जकाँ ओतेक भोरे पोखरिमे नहाय केओ नहि जाइछ। थपड़ी पिटबाक अर्थ ई होइछ जे कीड़ा-मकोड़ा, साँप-बीछ हो तँ आवाज सुनि हटि जाय।

ई कहल जा सकैछ जे शशितारे सुतल फूलपुरकेँ जगबैत छथि।

शशितारा जँ एतय नहि रहती तँ घर-घर घूमि कऽ सभटा

फुलवाड़ीसँ फूल के उतारत? आ फुलचोरा छौंड़ा सभकेँ डाँट-दबार के करत? के कहतैक- "रे मरकीबा, एतेक भोरे फूल चोरबय अयलैं अछि? तोहर माय-बाप की मरि गेलौक अछि? कनियोँ रोक-टोक नहि करैत छहु? गाछपर किएक चढ़ैत छैं? खसबैं तँ सभ हाड़-पाञ्जर चूर भऽ जयतौ। उतर जल्दी।"

छौंड़ा कहितैन- "वाह बाबी! अहूँ तँ फूल तोड़ैत छी।"

चोरी कऽ रहल छी, से कहबाक साहस नहि होइक ओकरा। मुदा परोक्ष रूपसँ जरूर कहितनि- "अहाँ लैत छी से चोरी नहि आ हमरा फूल तोड़ैत देखि लेलहुँ तँ हम चोर भऽ गेलहुँ।" मुदा सोझाँ कहबाक साहस नहि छैक ककरोमे।

शशितारा डाँटि कऽ कहितथिन- "हम तोरा जकाँ फूल खराब कऽ रहल छियैक?"

"तँ की हम कऽ रहल छी?"

"नहि तँ की कऽ रहल छैं?"

"नहि बाबी, हम फूल एहि लेल तोड़ि रहल छी जे केओ पूजा-तूजा करताह तँ हुनका काज अओतनि ई। अहाँ तँ बाबी चम्पा गाछपर नहि चढ़ि सकैत छी, लेब सोनचम्पाक फूल?"

शशितारा स्नेहिल भऽ कहितथिन- "जीबैत रह बौआ। ई जे तोँ देबाक बात कहलैं ताहीसँ हमरा सभ भेटि गेल, मुदा तोहर बासि वस्त्रमे तोड़ल फूल लऽ कऽ हम की करब?"

पुनः तेज-तर्रार भऽ कहितथिन- "जल्दी उतर गाछपर सँ। जो, घर भाग। फेर कहियो बासि कपड़ामे फूलकेँ हाथ नहि लगबिहेँ। जँ हम देखलियौक, तँ फेर तोहर से दशा करबौ जे तोहूँ मोन रखबैं।"

छौंड़ा सभ भागि पड़ाइत। ओकर बाद कृष्णक अष्टो त्तरशत नाम जपैत शशितारा बाँचल फूल, तुलसी दल चुनि आँगनक बाट धऽ

लितथि। ओ जँ एतय नहि रहती, तँ ई हल्ला-हंगामा के करत?

शशिताराक कहब छनि जे भगवानक नाओं क स्तवन जोरसँ करब ठीक होइछ। एहिसँ तीनू लोकक उपकार होइत छैक। गाछ-वृक्ष, कीड़ा-फतिंगा, जल-स्थल, आकाश-वायु एहि सभमे उच्चारण शक्ति होइछ नहि, श्रवणहिसँ हिनका सभक उद्धार होइछ।

कहबाक लेल शशितारा ई सभ कहैत जरूर छथि, मुदा सोचबाक कोनो कारण नहि अछि जे शशितारा कृष्ण-प्रेमक सागरमे डुबकी लगबैत रहैत छथि।

ई सभ ओ लोक-शिक्षाक हेतु कहैत छथि। आखिर जनसाधारणकेँ सीख देबयवला तँ केओ चाही आ शशिताराक अतिरिक्त एहि बातक आवश्यकता बुझैत के अछि? शशितारा एतय नहि रहती तँ घरे-घर घूमि कऽ हाल-चाल पूछऽवला के रहि जायत?

भिनसर कऽ पूजा समाप्त कऽ, मात्र चरणामृत पान कऽ ओ हाल-चाल पूछऽ निकलि पड़ैत छथि। बेसी लोक तँ बाटहिमे भेटि जाइत छनि, किएक तँ ओ सभ खेतिहर रहैत छथि आ हुनका सभकेँ भोरे-भोर घरसँ निकसय पड़ैत छनि।

ओना गाम अथवा छोट शहरक लोक सभ किछु अहदी प्रकृतिक होइत छथि। ओ सभ पैघ शहरक लोक जकाँ किछु अन्हरगरे उठि कऽ दौड़ा-दौड़ी नहि करैत छथि। ओ सभ देरीसँ सूति कऽ उठैत छथि। घण्टा भरि दातमनि करैत छथि। जँ चाहक लति लगौने रहैत छथि तँ शहरी जकाँ दूटा बिस्कुट अथवा एकटा टोस्टसँ चाहक पर्व समाप्त नहि होइत छनि। हुनका सभकेँ लाइ-पकौड़ी, उसिनल बूट अथवा मटर चाही। जखन एतेक किछु चाही तँ भोरुक जलखैमे बिलम्ब होयबे करतनि।

तँ दोकानदार दोकान खोलैत अछि आठ-नौ बजे। गोआर दूध दैत अछि दस बजे आ बर्त्तन-बासन माँजयवाली बहिकिरनी अबैत अछि रौद

छिटकलापर।

प्राइमरी स्कूलक नेना सभकेँ तँ जल्दी जाय पड़ैत छैक। ओ सभ भोरे उठि कऽ मुँह-हाथ धोअय कि नहि, गुड़ संगे रोटी-परौठा खा कऽ निकलि भगैत अछि आ दुपहरियाक पढ़ौनीवला नेना सभक लेल भात संग तरकारियो रन्हा जाइत छैक। भरल-पूरल परिवारमे अनेक तरहक दू-चारि गोट सदस्य होइत छैक आ तेँ अधिकांशत: देखल जाइछ जे घरक दू-तीन पुतोहुमे सँ एकटा भोरे जल्दी उठि, भनसा घरक बाहर लकड़ीक चूल्हि जरा कऽ भात चढ़ा दैत छथिन। ओना किछु घरमे 'जनता स्टोव' लकड़ीक चूल्हिक स्थान लऽ लेलक अछि, मुदा से फिजूलखर्चीक घरमे, मितव्ययीक घरमे नहि, कारण गाममे जारन ओहिना भेटि जाइछ, कीनय नहि पड़ैछ। बस, कने बिछबाक काज। मटिया तेल तँ मँगनी नहि भेटैत छैक।

जाहि घर सभमे डेली पैसेंजरी करयवाला लोक छथि, ओतुक्का पद्धति भिन्न अछि, जेना चट्टोपाध्याय परिवारमे। शशिताराक ओकील भतीजा तँ शहरेमे किरायाक मकानमे रहैत छथि, मुदा कनियाँ ओतय नहि रहैत छथिन। कनियाँ एतहि रहैत छथिन। ओतुक्का गृहस्थी पुरान नोकर दामोदर देखैत छनि। छुट्टी होइतहि ओ एतय आबि जाइत छथि आ कचहरीमे तँ छुट्टी होइतहि रहैत छैक। दूटा भातिज आ हुनक नोकरी करयवला बेटा प्रति दिन रेलगाड़ीसँ यात्रा करैत छनि। पैघ भतीजा हालहिमे रिटायर भेलथिन अछि नहि तँ ओहो एखन धरि एहिना करैत रहल छलाह।

तेँ चट्टोपाध्याय परिवारमे गृहस्थीक पहिया खूब भोरे घरघरायब शुरू भऽ जाइछ। मुदा जँ डेली पैसेंजरीक चक्कर नहियोँ रहैत तँ की शशितारा ककरो चैनसँ रहय दितथिन? छोट भतीजाक कनियाँ कहैत छथिन- "पागल छथि पीसी। काज कोनो ने रहैए, तइयो कौआ बाजयसँ पहिने उठा-पटक शुरू कऽ दैत छथिन। मुदा गृहस्थी पैघ छनि आ काजो

बहुत। तइयो ओ हुनका 'पीसी' कहैत छथिन। ओना अनाथक वयसक बहुत लोक हुनका 'बाबी' कहैत छनि आ अजिया सेहो। ओकरा सभक बाप-पित्ती हुनका 'पीसी' कहैत छनि।"

आब यैह जे शशितारा टोला-महल्लामे हाल पूछय जाइत छथि, तँ की बिना घरक काज देखनहि चलि जाइत छथि? आब ओतेक काज होइछ तँ नहि मुदा बाजि-बाजि कऽ गृहस्थीक मशीन चालू कऽ दैत छथिन। भतीजा अथवा भतीजाक बेटा केओ आठ बजे गाड़ीसँ जाइछ तँ केओ साढ़े आठवालीसँ। टोला-मोहल्लाक चक्कर लगा शशितारा ओहिसँ पहिने घुरि जाइत छथि। एहि समय ओ ककरो आँगनमे पैर नहि रखैत छथि। बाहरेसँ आवाज दैत छथिन- "की रे साधन, एखन धरि घोड़ा बेचि सुतले छैं? अरे, ई कह जे दोकान खोलबैं कखन? साँझ भेलापर? जनै नहि छैं, एहिसँ लक्ष्मी नहि ठहरैत छथिन। सबेरे उठ, कपड़ा बदल, दोकान खोलि, धूप-अगरबत्ती देखयबैं, तखन ने लक्ष्मीक कृपा हेतनि। से नहि, तँ बेरू पहर भऽ गेल, एखन धरि तोँ सुतले छैं।"

डाँट-दबार करैत चलैत रहैत छथि। यावत साधनकेँ दबारब खत्म भेलनि, ताबत धरि दोसर मकानक सोझाँ पहुँचि चुकल छलीह- "अनाथ, रे अनाथ! एखन धरि उठलैं नहि? उठि गेलैं, हमरा तँ भेल जे साधन, नगेन अथवा भजहरि जकाँ तोँहू बेर धरि सूतब शुरू कऽ देलैं। तोँ छैं शिक्षक, तोँ जँ आलसी भऽ जेबैं, तँ काज कोना चलतैक? कहल जाइछ जे धर्म तँ अपन आचरणसँ सिखाओल जाइछ। जँ तोँ स्वयं दृष्टान्त नहि बनि सकबैं, तँ विद्यार्थीकेँ की सिखयबैं?"

अनाथ मास्टर बाहर आबि कहैत छनि- "पीसी, अहाँक नहायब, पूजा-पाठ सभ काज एतेक जल्दी भऽ गेल?"

उत्तरमे शशितारा एकेटा बात कहैत छथिन, मुदा भाषा एक नहि रहैत छनि। आइ कहितथिन- "अनाथ तोँ रोज एके बात कहैत छैं, देख

कतेक दिन निकलि आयल।”

तँ काल्हि कहितथिन- “हँ बेटा, ई काज लोकक उठबासँ पहिने कऽ लेब ठीक रहैछ, नहि तँ के जानए कोन बाधा पड़ि जाय।”

बात तँ असलमे ई रहैत छैक जे एकान्तमे बैसि भगवानकेँ स्मरण करबाक स्थानपर ओ टोला-महल्लाक चक्कर लगबैत लोककेँ जगबैत फिरैत छथि। मुदा ई बात कहबाक कोन कथा, ककरो दिमागोमे नहि अबैत छैक।

अनाथ मास्टर श्रद्धासँ झुकि क ऽ कहैत छनि- “पुण्यात्मा छी अहाँ, पीसी।”

अनाथ एहि गामक रहयवाला नहि अछि। मुदा बहुत सालसँ एही गाममे रहि रहल अछि। स्कूलमे पढ़बैत-पढ़बैत ओकर केश उज्जर भऽ गेल छैक।

लड्डु बोसक घरवाली बाहर आबि प्रणाम करैत छनि। “अरे, रोज की प्रणाम करैत छी?” लड्डु बोसक कनियाँ बड़ श्रद्धालु छथि। ओ कहैत छनि- “पीसी, अहाँकेँ दिनमे चारियो बेर प्रणाम करी, तँ अपनाकेँ धन्य मानी।”

“बस चुप रहू। लड्डु उठल कि नहि ?” ओकर घरवाली एम्हर-ओम्हर देखि मुड़ी डोला दैत छनि।”

“बूझल अछि! ई अहदीपना एकर सत्यानाश कैलकैक अछि। ई कोनो बात नहि भेल जे एक बेर नोकरी छूटल तँ दोबारा नोकरी भेटबे नहि कयल। कतेक दिन भेलै नोकरी छुटला? तहियासँ घरे बैसल रहि गेल। ने कोनो काज, ने कोनो बात। अहाँक बेटा स्कूल जाइत अछि की नहि?”

“हँ पीसी।”

अनाथ मास्टरसँ कहि-सुनि शशितारा लड्डुक बेटाकेँ स्कूलमे फ्री

करा देलथिन अछि आ भतीजासँ कहि-सुनि कऽ लड्डूकें अपन घरक दू-तीनटा बच्चाकें मास्टरमे लगा देलथिन अछि। ओना भतीजा एहि आलसी, कोढ़िया लड्डूकें एकदम नहि पसिन करै त छनि, मुदा पीसीक बात काटओ कोना?

शशितारा कहने छलथिन- "देखह, जँ एहि कोढ़ियाठकें तोँ सभ अपन दफ्तरमे लगा सकैत छलह, तँ हम तोरा सभकें कखनहुँ नहि कहितियहु जे बच्चाकें पढ़यबा लेल एकरा राखि लैह। पढ़ाओत ई कतेक, से हम खूब जनैत छी। बस, किछु काल लेल बच्चाकें रोकि अपना लग बैसा राखत। मुदा ई कोन ठामक न्याय अछि जे ओ अहदी, निकम्मा अछि, तँ ओकर बहु-बेटा भूखे मरय? मनुक्खक बनाओल समाजमे जखन रहि रहल छह, तँ मनुक्खक परिचय तँ अपनामे किछु होयबाके चाही। जँ एहि तरहें तोँ सभ एकरा मदति नहि करैत छहक तँ पूरा परिवार भीख मँगैत फिरतैक। तेँ कहैत छिअह जे एकरा काजमे लगा दुनू पक्षक इज्जत राखि लैह।"

लड्डूक पक्षमे एतेक कहय पड़त जे एहि मास्टरीमे ओकरा दरमाहा जे भेटैत होइ, एहि काजकें ओ मूल्यवान बूझैत अछि आ बहुत निष्ठा आ एकाग्रतासँ निमाहैत अछि।

लड्डूक घरवाली सेहो थोड़-बहुत पाइ कमाइए लैत छैक। कहियो केओ भरि बट्टूक दालि भिजा कहा पठबैत छैक, 'चरण माय, आइ आबि कऽ अदौड़ी खोंटि देब?' तँ लड्डूक कनियाँ- 'नहि' कखनो नहि कहैछ। हुनका घर जा दालि धो-पीसि, फेंटि कऽ बड़ी खोंटि दैत छथि न। ओहो सभ चरण लय मधुरक नामपर रुपैया-अठन्नी खूँटमे बान्हि दैत छनि। आ एहन बजाहटि चरण माय लग अबितहिँ रहैत छनि। खाली अदौड़ीए नहि, अँचार, अमोट सेहो खूब बनबय जनैत अछि ओ।

शशितारा अधिक काल कहैत रहैत छथिन, "छोट जातिक स्त्री

सुखमे रहैत अछि। ओकरा सभकेँ कोनो काज कयलासँ इज्जतमे बट्टा नहि लगैत छैक, चाहे ओ ककरो ऐंठ-कूठि माँजय, आँगी-कपड़ा धोअय आ कि बथान साफ कऽ गोइठा पाथय, ओकरापर केओ आँगुर उठयबाक हिम्मति नहि करैत छैक। पैघ जातिवालीक स्त्रीक तँ मौगति छैक। जँ घरवलाक लग पाइ हो, तँ मौज करय, नहि तँ बेमौत मरय, मुदा घरसँ बाहर निकलि किछु उपाय करबाक नहि सोचि सकय।

के बेमौत मरि रहल अछि, से केकरो पता नहि चलैक मुदा शशितारांकेँ नहि जानि कोन ढंगसँ, जरूर पता लागि जाइनि। केओ देखि नहि पबैछ मुदा ओ जरूर देखि लैत छथिन।

चलैत-चलैत लड्डूक घरवालीसँ कहैत जाइत छथिन- “दुपहरियामे एक बेर घरपर आबि जायब। संगमे एकटा कटोरी लेने आयब। दूध-अमोट चरणकेँ नीक लगैत छैक, ओकरा लए लेने जयबै।”

इहो शशिताराक मदति करबाक एकटा बहाना छनि। कहियो चरण लए दूध-अमोट तँ चरण माय लए माछक एकटा कुट्टी आओर खयबा लेल थारी भरि भात, कहियो चरणक बापक पसिनक केरा-फूलक वा पलाँकीक तरकारी, तात्पर्य ई जे ओकरा सभकेँ कनेक सुविधा भऽ जाइक।

लड्डूक परिवार सन कतेको परिवार अछि एहि गाममे जाहिपर शशिताराक बड़ उपकार छनि।

लड्डूक घरसँ होइत शशितारा विपिन वैद्यक घर अबैत छथि। जखन ओ पहुँचैत छथि तँ बेसी काल विपिन अपन दलानपर बैसल दातमनि करैत रहैत छथि।

ई अनाचार शशितारांकेँ सहल नहि जाइत छनि। ओ विपिनकेँ टोकि दैत छथिन- “की रे विपिन, बड़ा भारी पण्डित बनैत छैं तोँ, दलानपर बैसि दातमनि करैत छैं। लक्ष्मी कोन दऽ अओथुन? ई थूक आ

ऐंठ पानिकेँ पार करथुन ओ?”

नीमक दातमनि दाँतसँ जाँति विपिन कहैत छनि- “लक्ष्मी आब एम्हर पैर राखयवाली नहि छथि, पीसी।”

‘कोना रखती? जखन तोहर एहन ढंग छौ? माय केहन छथुन?’

‘छथि! हुनक रहब, नहि रहब, एके बात छनि।’

“बात करबाक ई कोन ढंग छौ रे विपिन।” बिगड़ि उठैत छथि शशितारा “जँ अपन माय सन देवीकेँ ध्यान नहि रखबैं तँ कोनो देवी तोहर दुरखाकेँ हुलकी मारय नहि अओथुन? वैद्यक बेटा भऽ कऽ मायक आँओं नहि ठीक कऽ पाबि रहल छैं। केहन वैद्य छैं तोँ?”

“साधारण आँओं नहि छनि, पीसी।”

“बड़ जनै छैं तोँ। तोहर मायक आँओं तँ एकटा टोटमाक खोराकसँ ठीक भऽ जयतनि, मुदा तोँ वैद्यक बेटा छैं, तोरा मायक इलाज टोटमासँ हो, से ठीक नहि, तेँ हम नहि दैत छियनि।”

“अहाँ लग जँ दवाइ अछि तँ दियौन ने पीसी। हमरा लेल कोनो बात नहि।”

“तोहर बातक परवाहि ककरा छै रे? बात तँ हमरा लेल अछि। जँ हमर टोटमासँ तोहर माय ठीक भऽ जयथुन तँ जेहो दू -चारि रोगी तोरासँ दवाइ लैत छहु, सेहो नहि अओतौक। फेर तोहर की होयतौक, सोचलैं अछि कहियो? देखि-सुनि कऽ तोँ नीक दवाइ दहुन।”

विपिन वैद्य विद्रोही भऽ कहैत छनि- “एहि वयसमे नीको दवाइसँ की होयतनि?”

आगि भऽ उठैत छथि शशितारा। कहैत छथिन- “वयसक टोन नहि देल कर विपिन। बुढ़ारी तोरो अओतौक। तोहर माय वयसमे हमरासँ किछु नहि तँ सात-आठ मासक छोटे होयतीह। बुझल छौ तोरा?”

"भऽ सकैत छै पीसी, मुदा माय तँ अपन स्वास्थ्य अहाँ सनक नहि राखि सकल छथि।"

अपन प्रशंसा सुनि शशितारा प्रसन्न नहि होइत छथि। ओ तमसा कऽ कहैत छथिन- "हमर बात जाय दे। पाइवलाक घर जनमल रही हम, सभ दिन दूध-घी खयलहुँ-पीलहुँ अछि। भेटलौ अछि तोहर मायकेँ ओहन खोराक? जे हो, मायक स्वास्थ्यक देखभाल ठीकसँ कर। निफिकिर भेनाइ ठीक नहि। मायक सेवा नहि करबैं तँ नरकोमे ने केओ पुछतौ।"

एहिना हुनक भोरुका भ्रमण चलैत रहैत छनि। पुरोहित भट्टाचार्यसँ लऽ कऽ दीनू गोआर धरि, हरेक घर जा कऽ ओकर हाल-चाल पूछब, ई हुनक नित्यक काज छनि।

खेतिहर मजूरक प्रति शशिताराक दया सभसँ बेसी देखल जाइछ। चलैत-चलैत दीनूकेँ कहैत छथिन- "ओहि दिन घी दऽ गेलैं दीनू, पाइ नहि लऽ गेलैं। एतेक पैघ नवाब तोँ कहियासँ भऽ गेलैं रे? आइए आबि कऽ अपन पाइ लऽ जइहेँ।"

कोनो दोसरकेँ कहथिन- "की रे हरण, एहि बेर बरखाक की हाल छै? धानक फसिल नीक होयतैक ने?"

पंचू कुम्हारकेँ देखि कऽ कहथिन- "की रे पंचू, तोहर चाक कतेक दिनसँ बन्द छौ? जनैत नै छैं जे कुम्हारक चाक, जोलहाक करघा आ लोहारक भाथी, एकरा कहियो बन्द नहि रखबाक चाही। हमर दादी कहथिन जे एना कयलासँ ओकरा उपास राखब होइछ आ ओकरा उपास रखलासँ ओकर साँस रुकि जाइछ। चाहे कमे समय लेल हो, चलेबाक रोज चाही आ काजे तँ लक्ष्मी छै रे पंचू! तोँ जतेक मेहनत करबैं, लक्ष्मी तोरासँ ओतबे सन्तुष्ट रहथुन। काल्हि वृहस्पति छैक। घरमे लक्ष्मी पूजा होयत। तूँ हमरा काल्हि लक्ष्मी पूजा लेल दूटा स रबा दऽ जइहेँ।"

इहो शशिताराक मदतिए थिकनि। जँ एहिसँ पंचूक किछु काज

बनि जाइक। बेचाराकेँ काज नहि, तेँ तँ एतेक उदास-उदास रहैत अछि।

गाम भरिमे एतेक हंगामा कैलाक बादो शशितारा भातिज आ भतिजबेटाक खयबाक समय धरि घर पहुँचिए जाइत छथि। घर भरिक लोक मनबैत रहैत छनि जे ई काज हुनका अयबाक पहिने सलटा लेल जाय, मुदा कहियो एना नहि भऽ पबैछ।

घरक लोकक एहि मान्यताक पाछाँ कारण यैह छल जे शशितारा जाहि तरहेँ सभकेँ ठूसि-ठूसि कऽ खयबाक जिद्द करै छलथिन से बड़ पीड़ादायक होइत छल। कनमा भरि वस्तु जतय अँटत ओतय सेर भरि ठूसल जाय तँ कष्ट होयबे करतैक ने।

घरमे पैर रखितहि ओ कहितथिन- "की यै बड़की कनियाँ, काल्हि ओतेक राति धरि जे हम तरकारी कटलहुँ, से ककरा लेल बनायब? एकरा सभहक थारीमे ने कटहरक रसदार अछि, ने केरा-फूलक सुक्खा तरकारी। माछो एके कुटिया किअए देलियैक? एतबो नहि बना पौलहुँ भोरसँ? की करैत छलहुँ? आ नहि बना पौलहुँ तँ नहि सही, किछु आओरे बना लितहुँ। दू-चारिटा तरुए तरि लितहुँ। अरे, यैह सभ तँ परिवारक प्राण थिक, एकरे सभहक भोजनमे एहन लापरवाही किएक?"

परिवारक लोक एहि धाराप्रवाह प्रवचनसँ घबराइत छथि, लज्जित होइत छथि आ कहैत छथिन- "नहि पीसी, भोजन तँ सभटा बनि गेल। हमहीँ नहि लेलहुँ अछि एखन।"

"से किअए नहि लेलहुँ? बहादुरी देखयबा लेल कि बहुक हिस्सामे कम भऽ जायत तेँ, आ की महगी बेसी भऽ गेलै अछि तेँ?"

एहि प्रहारसँ भतीजा तँ माथ झुका लैत अछि , मुदा बिआहल पोता बाजि उठैत छनि- "ओह, मइयाँ अहाँ ओकालति किएक नहि कयलहुँ? विपक्षीके नीचाँ देखयबामे अहाँक बरोबरि ककरो नहि देखलहुँ। बेसी कतहु खायल जाइ?"

“एतबो दिनमे आदति नहि गेलौ? अरे, ई डेली पैसेंजरी जखन भरि उमेर करबाक छौ, तँ पेट भरि कहिया खयबें?”

“मइयाँ, एतेक कतहु केओ नहि खाइछ।”

“नहि खाइ छै, तें ओकरा सभक हाल नहि देखैत छैं? चालीस भेलै नहि कि आँखिपर चश्मा चढ़ि गेलै। पचासक होइते रीढ़क हड्डीमे घुन लागि जेतै। भोजनेसँ ताकत भेटैत छै। खयबें नहि तँ दिन भरि मेहनति कोना करबें? बड़की कनियाँ, राति कऽ जे दूध गाढ़ कैने छलहुँ , ओहिमे सँ नहि बचल अछि की? ओहीमे सँ थोड़ेक दऽ दियौ ने। माछ तँ खयबे नहि कैलक, काँट बिछबाक बहन्ने सभटा फेकि देलक। अहूँ केहन छी कनियाँ! ई सभ खाय नहि चाहैछ, बहाना बनबैत अछि आओर अहूँ ओकरे मानि लैत छी। माछ नहि खायत तँ आँखिक इजोत कोना बढ़तै?”

एकटा पोता हँसी करैत छनि- “एना कोना भऽ सकैए मइयाँ? अहाँकेँ देखि कऽ के कहत जे माछसँ आँखिक इजोत बढ़ैत छैक? आइयो अहाँकेँ जतेक साफ देखाइए, ताहिसँ लगैत अछि जे अहाँ सय वर्ष हमरा सभहक पहरेदारी कऽ सकैत छी।”

पोताक गप्पपर तामस नहि होइत छनि। कहैत छथिन- “यैह तँ होयबाक चाही- आँखि, कानसँ हाथ धो; हाथ-पैरसँ हारल पड़ल रही, ताहिसँ तँ यैह नीक।”

गप्प। खाली गप्प। अनगिनती गप्पक प्रवाह।

कनसारक खापरिमे जेना लाबा फूटैत-छिटकैत रहैए तहिना शशिताराक गप्प छिटकैत रहैत छनि। ककरोसँ हो, कोनो विषयपर हो, गप्पक कमी हुनका कखनो नहि रहैत छनि।

सभसँ आश्चर्य जे शशिताराक तिक्ख-चोख गप्पक ककरो तामस नहि होइत छैक। पुतोहुए सभकेँ की कम कहैत छथिन? बूढ़, अधवयसू भतीजा सभकेँ की कम डाँट-दबार करैत छथि? मुदा हुनक गप्पक केओ

उनटि कऽ जवाब दिअय, से ककरो मोनमे ई बात नहि अबैछ।

शशितारा सासुर जा रहल छथि। एहि बातसँ कतेक लोक चिन्तित अछि। जोगियाक कनियाँ तँ कहिए बैसलनि- "पीसी, ई तँ फूलपुरक प्राण छथि, घुरबामे बिलम्ब नहि करिहथि।"

शशितारा कहलथिन- "की हम मरब नहि? हमरा फूलपुरक प्राण बनलासँ काज कोना चलत?"

"चलतैक किएक नहि? जे बात छै से हम कहलिअनि अछि। ओहि बेर जे ई सात दिन लेल तीर्थपर गेल रहथि, ओहिसँ गामक लोककेँ ऊपरका साँस उपरे आ नीचाँक निच्चे रहि गेल छलै। हिनका अयलापर हमरा सभहक प्राण घुरल।"

शशितारा हँसय लगली। कहलथिन- "कनियाँ, ई अहाँ की कहै छी! हमरापर एतेक श्रद्धा नहि राखू, भगवानपर राखू, वैह असलमे काज देताह।"

"ई सभ नहि जनै छी पीसी, हमरा सभ लेल तँ यैह भगवान छथि। साफ कहथु, कहिया अओती?"

"अहूँ खूब छी कनियाँ! पहिने जाय तँ दिअऽ।"

खाली वैह नहि। आओरो कतेको लोक एहि प्रश्नक उतारा चाहलक। "कहिया अओथिन? कहिया घुरथिन? हिनका बिना हम सभ कोना रहब?"

इहो सम्भव अछि जे जतेक आकुलता ओ अपन भाषामे प्रकट करैत छथि, ओतेक आकुल छथि नहि! मुदा यैह व्यवहार छनि। परन्तु इहो सत्य अछि जे हुनका एतयसँ चलि जेबाक बात सुनि लोक चिन्तित अवश्य अछि। ई सत्य अछि जे फूलपुरक लोककेँ हुनकापर बहुत विश्वास छनि, भरोसा छनि। हुनका रहलासँ एहन लगैत छैक जे ओ सभ पहाड़क छत्रछायामे अछि जे ओकरा सभकेँ अन्हड़, पानि, जाड़, गर्मी आ

बरसातसँ बचबैत रहतैक। सभ हुनका अपन श्रेष्ठ मानैत छनि। ओकरा सभक मानब छैक जे जाबत ओ लगाम थम्हने छथि, सभटा ठीके चलत आ जहिया ओ लगाम छोड़ि देती, सभ गड़बड़ा जायत। बेटी-पुतोहु हुनकासँ डेराइत छनि। ओ नहि रहितथि तँ आइ धरि नहि जानि की सँ की भऽ गेल रहैत?

ओकरा सभक बात सुनैत-सुनैत शशितारा अकच्छ भऽ गेलीह। अन्तमे कहलथिन- "लगैत अछि हमरा मरि कऽ फेर एही फूलपुरक बाँसक जंगलमे चुड़ैल बनि कऽ रहय पड़त।"

शशितारा सासुर विदा भेलीह। स्टेशन जयबाक हेतु रिक्शा चाही। मदन रिक्शावाला आबि कऽ कहि गेलनि- "चिन्ता नहि करब पीसी। हम ठीक समयपर आबि जायब। भैयाजी हमरा कहि देलनि अछि।"

हुनक तेसर भतीजा संग जयतनि।

चलैत-चलैत एक ठाम रिक्शा मद्धिम कऽ कऽ मदन पुछलकनि, "कहिया घुरबै पीसी?"

शशितारा जनैत छथि जे जाहि काजे ओ जा रहल छथि, ओहिमे कम-सँ-कम सात दिन तँ अवश्ये लगतनि। जे हो, सात दिन हुनका ओतय कष्टो काटि कऽ रहय पड़तनि। मोनमे मुदा भय छलनि जे कोन ठेकान जँ नहि रहि सकी, जँ दोसरे दिन चलि आबी, तखन की होयत? तेँ ओ ककरो नहि कहय चाहथि जे कहिया धरि घुरबाक विचार छनि। मदनोकेँ तेँ तेहने उतारा देलथिन। कहलथिन- "जहिया मोन होयत, आबि जायब।"

"मुदा ई कहू पीसी, अहाँ जा किएक रहल छी?"

ओ कहलथिन- "कहियो ने कहियो तँ सासुर जयबाक चाही ने। यैह बूझह जे तीर्थ करय जा रहल छी।"

आइ जकरा ओ तीर्थ कहि रहल छथि, ओहि तीर्थक प्रति हुनक

श्रद्धा वा आकर्षणक कोनो परिचय ककरो नहि भेटल छलैक।

हुनक जयबाक असली कारण जनैत छथि शशिताराक भातिज ओकील अजीत चट्टोपाध्याय। ओ ओकील छथि, तेँ हुनका बूझल छनि, आओर एहूसँ पैघ बात ई अछि जे वैह ई समाचार शशिताराकेँ देलथिन अछि।

शहरमे रहि ओकालति करयवला अजीत एहि बातक पता लगौलनि जे शशिताराक सासुर वीरनगरमे आओर केओ हो कि नहि, शशिताराक सतबा सासु यमराजक कृपासँ ठीक-ठाक स्थितिमे जीवित छथिन। संग-संग इहो अजीते कहलकनि जे जमीन-जायदाद सेहो कोनो कम नहि छनि। वीरनगर पहिलुक अन्हार घुप्प गाम नहि अछि, शहर भऽ गेल अछि आ ओतुक्का जमीनक दाम दिन-पर-दिन बढ़ले जा रहल छैक। पहिने एक बीघा जमीनक जतेक दाम छल, आब एक कट्ठा जमीनक ओतबे दाम अछि। एखन धरि तँ ओ बूढ़ीए सभ किछु अपना कब्जामे कयने छलनि, आ ओतय जा कऽ अपन हक-हिस्साक बात उठयबाक सवाले नहि छलनि। हालहिमे ओ मुइलीह अछि आ यैह मौका छनि। अजीत प्रतिदिन कहि रहल छनि जे आब एक बेर ओतय जायब उचित अछि। सतबा सासुक धीया-पूता छनि तँ की भेल, आधाक मालिक तँ शशितारे छथि।

तखन फेर?

तखन फेर मकानक हिस्सा भेटनि कि नहि, बीस-बाइस बीघा जमीन तँ शशिताराकेँ सहजे भेटि जयतनि। ई तँ हुनका दायभागसँ भेटतनि। एकर अर्थ ई जे ओहि जमीन सभकेँ जँ एखन बेचथि तँ बीस-बाइस हजार रुपया अपन भऽ जएतनि आ जँ नहि बेचथि, ओहिना रहय देथि तँ दाम बढ़ितहि जयतनि।

भतीजा जखन हुनका ई बात कहलकनि तँ शशितारा मोनहि मन

बड़ प्रसन्न भेलीह, मुदा ऊपरसँ संयत रहैत सतबा सासुक मृत्युक अशौचसँ निवृत्त होयबा लेल नूआ लऽ पोखरिमे डूब देबय चलली।

दोसर दिन नौआइनकेँ बजा कऽ नह कटबौलनि। स्नान कऽ पुरहितकेँ बजा दान-दक्षिणा देलथिन। आओर विशेष किछु करबाक काज नहि छलनि किएक तँ हुनका मुइना दू माससँ ऊपर भऽ गेल छलनि।

रेलगाड़ीमे जाइत-जाइत अजीत बुझबैत रहलथिन- "ओतय के अछि, के नहि, जानि नहि। भऽ सकैछ दूरक सम्बन्धी सभ जमल होथि। ओ सभ अहाँकेँ देखि प्रसन्न होयता से बात नहि। मुदा पीसी, अहूँ डटल रहब, हटब नहि।"

शशितारा कहलथिन- "बस चुप रह अजीत। तोँ हमरा बेसी पढ़ा नहि। सासुरक बात अछि, तेँ तोरा संग लऽ जा रहल छियौक। सम्पत्तिक बात अछि, नहि तँ तोरा सनक लोकक हम मोजर करैत छी?"

दबार सुनि कनेक काल अजीत चुप रहला। तखन बात बिसरि कहिये बैसलथिन- "देखू पीसी, केओ अहाँक खुशामद करय, तँ ओकर बातमे नहि आबि जायब।"

बुझबैत शशितारा कहलथिन- "तँ तोँ सोचैत छैं जे तोँ छैं तखने हम सम्हरि कऽ रहब, ने तँ ओकरा सभक लल्लो-चप्पोमे आबि जायब?"

अजीत पेशासँ ओकील छथि। ओकालति करैत-करैत हुनक बुद्धियो पेंचवला भऽ गेल छनि। ओ अपन ओकीली-पेंच लगा कऽ कहलथिन- "देखू पीसी, ई तँ मानल बात अछि जे अहाँक ओतय जायब ककरो नीक नहि लगतै। अहाँक सासुरक लोक किछु खयबा लेल देथि तँ खा नहि लेब। की पता जे की हो ओहिमे..?"

शशितारा तमकि कऽ कहलथिन- "की रे, अजीत। तोँ एखन जनमबे कयलैं अछि की? तोँ कहिया हमरा ककरो हाथक किछु खाइत

देखलैं? भगवती पूजाक प्रसाद जखन ककरो घरसँ अबैत अछि, तँ हम मुँहमे नहि रखैत छी, बस माथसँ सटा राखि दैत छी। आ तोँ हमरा खयबासँ मना करय चललैं अछि। तोँहूँ खूब छैं!"

एहि दबारक बाद भतीजा मुँहपर ताला लगा लेलकनि।

शशितारा जखन वीरनगर पहुँचली तँ ओहि समय दुपहरियाक दू बजैत छलैक। जानिए कऽ एकादशीक दिन चलल छलीह जाहिसँ ओहि दिन खयबा-पीबाक चिन्ता नहि रहनि।

संग अनलनि अछि छोट बिछौन, किछु बर्त्तन, दू-चारिटा कपड़ा आ आनो जरूरी सामान सभ। मुदा जाहि वस्तुक एहि दुनियाँमे सभसँ बेसी आवश्यकता होइत छैक से ओ पर्याप्त अनलनि अछि। हुनक पिता अभय चट्टोपाध्याय बेटीक नाम पर्याप्त जमीन छोड़ि गेलथिन अछि। ओकर जे किछु आमदनी अबैत छनि, ताहीसँ शशिताराक अपन खर्च, तीर्थ-धर्म सभ चलि जाइत छनि।

तँ एतहु तीर्थे आयल छथि।

अजीत भोजन कइए कऽ आयल छथि। साँझुक गाड़ीसँ घुरि जयताह। चाह स्टेशनेपर पीबि लेताह।

पहिने एक दिन आबि कऽ अजीत घर-तऽर देखि गेल छलाह, तेँ रिक्शावलाकेँ घर चिन्हयबामे कोनो कठिनता नहि भेलनि।

रिक्शासँ उतरल छलीह शशितारा। अजीत कहलकनि- "हम एखने अबैत छी, सेटलमेन्ट ऑफिसमे किछु काज अछि हमरा। अहाँ नहि घबड़ायब पीसी, भीतर अकड़ि कऽ जायब।"

शशितारा कहलथिन- "तोहर गप्पसँ तँ एहन लगैए अजीत, जेना तोँ कोनो दूध पीबैत बच्चाकेँ सासुर पहुँचाबय अयलैं अछि।"

अजीत हँसैत चलि गेलाह। पीसीपर हुनका भरोस छनि, मुदा

बजबाक आदत छनि, तैं ओ कहने छलथिन।

आँखि बिदोरि कऽ देखलनि शशितारा। मकान आइ खण्डहर सन लागि रहल अछि। बाहरी हिस्सा लगभग खसि पड़ल अछि। ईंटाक ढेरी सामने पड़ल अछि, तकरा पार कऽ भीतर जाय पड़ैछ। भीतरक केबाड़ बन्न अछि।

ओ केवाड़ मुदा बेसी काल बन्न नहि रहल। रिक्शाक घण्टी सुनि दूटा बच्चा दौड़ल आयल आ हुनका देखि फुर्तीसँ घुरि गेल।

एकर कनेक कालक बाद, माथपर आँचर रखैत साड़ी समेटैत एकटा अधवयसू स्त्री बाहर अयलीह। आँखिमे उत्सुकता आ अनन्त जिज्ञासा लेने। शशितारा अनुमान करैत कहलथिन- "जे हालहिमे दिवंगत भेलीह अछि, अहाँ हुनके पुतोहु छियनि किने?"

ओ स्त्री स्वीकृतिमे मुड़ी हिलौलकनि, पुनः कहलकनि- "मुदा अहाँ? अहाँकेँ तँ..?"

"अहाँ हमरा नहि देखने होयब। कोना देखब? कहियो सम्बन्ध रखने रहितहुँ, तखन ने देखितहुँ। हम हुनक सतौत बेटाक पुतोहु छियनि।"

ई सूचना भेटितहि ओहि प्रौढ़ाक मुँह जँ उज्जर भऽ जाइनि अथवा चक्कर आबि जाइनि, तँ आश्चर्ये की?

हुनको वयस लगभग साठिक छनि, मुदा एखन धरि रणचण्डी सासुक पुतोहु भऽ बसल छलीह। एतेक दिनपर भगवान किछु कृपा कैलथिन तँ ई उग्रतारा कतयसँ आबि गेलीह?

हुनक सतौत बेटाक कनियाँ, अर्थात् सम्पतिक हिस्सेदार! सासु के मरिते सम्पतिक हिस्सेदार कोना धमकि गेलीह। ने किछु कहब, ने किछु पूछब, सर-सामान लऽ रहय आबि गेलीह। एतेक वर्ष धरि कहियो हुलकीयो नहि मारने छलीह।

पाथरक मूर्त्ति जकाँ ओ ठाढ़ि रहलीह। पैर छुबि प्रणाम करबाक चाही, सेहो मोन नहि रहलनि। हुनका मोनपर की बीति रहल छनि, से शशितारा खूब बुझैत छथि।

मोनहि मोन हँसैत शशितारा कहलथिन- "कनियाँ, हम अहाँक जेठ दियादिनी छी। हमर पैर छुबितहुँ तँ अहाँक की बिगड़ि जाइत? अस्तु, माँगि कऽ हमरा मान नहि करेबाक अछि। आब एकटा काज करू। एकटा कोनो स्वच्छ स्थान देखाउ जे रिक्शावला हमर सामान उतारि कऽ राखि दिअय। ओ तँ रहय नहि आयल अछि।"

एक-एकटा वाक्य जेना एक-एकटा अग्निवाण। आब ओ अधवयसू प्रणाम करबाक मुद्रामे झुकैत पुछलथिन- "अहाँ भीतर नहि अयबैक की?"

"लिअऽ, अयबै नहि तँ की ओहिना विदा भऽ जयबै? बाकस-बिछौन लऽ कऽ अयलहुँ अछि। रिक्शावला पहिने सभ सामान राखि दिअय, ओकरा पाइ दऽ दी, फेर आयब भीतर। सासु मरि गेलीह, कोनो सूचना नहि देलहुँ। सतबा रहथि तँ की, छलीह तँ ससुरक बिआहलि! हुनक मृत्युपर अशौच नहि मानितहुँ की? अहाँ तँ हमर सम्बन्ध स्वीकार धरि नहि करय चाहैत छी! डर होइत अछि जे लोक बूझि ने जाय जे बुढ़ियाकेँ एकटा आओर पुतोहु छनि, सम्पत्तिक हिस्सेदार।"

ओ स्त्री रूसैत कहलकनि- "अहाँ हमरा ई सभ किएक कहैत छी? हम तँ कहियो अहाँकेँ देखबो नहि कयलहुँ, जनितो नहि छलहुँ।"

"देखलहुँ नहि, से तँ ठीके, मुदा जनितो नहि छी, से तँ पूर्ण सत्य नहि भऽ सकैछ। अस्तु, जे हो, ठाढ़ नहि रहू, जाउ रिक्शावलाकेँ कहियौ जे सामान कतय राखत? घर तँ देखैत छी जे खूब पैघ अछि। कोठलीयो खूब अछि। लगैए जे रहैयोवला लोक बेसी नहि छथि। स्थानक कमी नहि होयत।" आँचरसँ बसात करैत शशितारा अपन छोट दियादिनीकेँ

कहलथिन।

बिना रुकने ओ फेर कहलथिन- "कमी होयबो करत तँ कोन बात छै? जमानापर जखन आबिए गेलहुँ अछि, तँ ई नहि बूझब जे जल्दी जायवाली छी।"

"अरे नहि, से किअए बूझब हम?"

"किअए बूझब? सुनू-बात! एखन अहाँ संसारमे पैरे रखलहुँ अछि की? अपन भोगक सामानक हिस्सा माँगयवलाकेँ देखि, ककर मोन होइ छै जे ओकरा करेजसँ सटा ली! वास्तविकता तँ ई अछि जे हम अहाँक दुश्मन छी, बुझलहुँ।"

आब ओ स्त्री स्पष्ट स्वरमे कहलकनि- "अहाँ हमर दुश्मन किएक होयब?"

"जे मोन हो से कहू मुदा जँ दुश्मन नहि छी तँ बहुत नीक। आब ई कहू जे एहि घरमे के सभ रहैत अछि? एहन शान्त अछि जे लगैए नहि जे बेसी लोक रहैत अछि। हमर दियर कतय छथि? ओहि मोट बुद्धिवलाकेँ एक बेर देखी तँ!"

ओ स्त्री एहिपर कोनो जवाब नहि देलकनि। भौंह सकुचाबैत रिक्शावलाक संग भीतर चलि गेली।

हुकुम चलबयवाली शशितारा हाक देलथिन- "नीचाँ पोछलाक बादे सामान रखायब।"

भीतर जा शशितारा नजरि खिरौलनि तँ देखलनि जे छतक सीमेन्ट ढनमनायल सन छैक जेना आब खसतैक। पुरना जमानाक मकान छैक। एहि दुर्गतिक कारण सो झाँ देखबामे अयलनि। देवालक फॉकमे बड़का-बड़का गाछ जनमल छल। ओकरा सभक बढ़ैत जड़िएक कारणे घरक ई दशा छलैक।

की एहि घरमे धिया-पूता नहि अछि? मुदा सभसँ पहिने तँ दूटा

नेना देखबामे आयल छल। एहि बुढ़ियाक नेना तँ नहि भऽ सकैछ। सम्भवत: ओकर दियरक धिया-पुता हो। एकर वयस तँ बहुत भऽ गेलैए। एतेक छोट नेना एकर नहि भऽ सकैछ, मुदा आओर कोनो स्त्री देखबामे नहि अबैत अछि। आओर केओ एतय रहितो अछि कि नहि?

सामान राखि रिक्शावला घुरि अबैत अछि। ओकरा किराया आ बख्शीश दऽ शशितारा विदा करैत छथि।

ओ स्त्री सोझे आपस आबि गेलीह। शशितारा कहलथिन- "चलू, हमरा बाट देखाउ। एकरे नाम तकदीरक खेल छै। के केकरा बाट देखा रहल अछि। एहि घरमे पहिने के पैर रखलक, अहाँ की हम?"

ओ स्त्री कहलकनि- "अहाँ हाथ-मुँह धोब?"

"धो लेब, मुँह-हाथ धो कऽ जलखै तँ करबाक नहि अछि, तखन धड़फड़ी कथीक?"

हुनको मोन पड़लनि जे आइ एकादशी छैक। मोन पड़िते चैन भेटलनि। सोचि कऽ प्रसन्न भेलीह जे एखन हिनकर आदर-सत्कारक जोगार नहि करऽ पड़त।

शशिताराक नजरिसँ हुनक मुँह परक संतोष आ तकर कारण नुकायल नहि रहल। आनन्द भेलनि। सोचलनि जे हम एतय हक जमा कऽ रहय अयलहुँ अछि तैं एकरा हमर एना आयब किएक नीक लगतै? कहलथिन- "चिन्ता जुनि करू। हम अपन आवश्यकताक सभ वस्तु संग अनलहुँ अछि।"

ओ स्त्री चकुअयलीह। पुछलकनि- "की सभ अछि?"

"सभ किछु अछि? जखन हमरा यैह नहि बूझल जे एतय के के छथि अथवा ओ सभ केहन छथि? तखन तँ अपन सभ इन्तिजाम कऽ कऽ अनबाके छल।" अपन भीतर उमड़ैत हँसीके दबा कऽ शशितारा कहलथिन- "हमर भातिज तँ हमरा चेतौलक जे ओतय केओ किछु

खयबा लेल दिअय तँ खायब नहि, पीसी। अहाँक सम्बन्ध तँ नीक नहि अछि। नहि जानि, ककरा मोनमे की हो।"

एहि बेर ओहि स्त्रीक मात्र भौंहे नहि, सौंसे मुहोँ सकुचा गेलनि। ओ आब नीक जकाँ बूझि गेलीह जे केहन भयानक जीवसँ पाला पड़ल अछि। तइयो ओ कहलकनि- "हिनक भातिज बुधियार बुझाइत छथि।"

"से तँ अछिए। पेशासँ ओकील जे अछि।" कहैत शशितारा ओहि स्त्रीकेँ धोपैत भीतर जा पहुँचै छथि आ भीतर गेलापर ठकमूड़ी लागि जाइत छनि।

आश्चर्य अछि। ई घर-दुआरि एतेक परिचित सन किएक लागि रहल अछि? एहन किए लगैत अछि जेना एकरा कतेको बेर देखने छी। आयल तँ छलहुँ जेना कोनो आओर युगमे आ रहल छलहुँ विवाहक बाद मात्र आठ दिन आ ओहो दिन सभ तँ घोघक तऽरेमे बीतल छल। तइयो एहन परिचित !

कतेक विचित्र बात छैक! शशिताराकेँ लगैत छनि जेना कोनो पछिला जन्मक बात मोन पड़ि रहल होइनि। ओ पूर्वजन्म नहि तँ की छल? मुदा देखबामे एहन लगैछ जेना हम एतुक्के छी- सभ दिनसँ छी।

एतेक दिनक बीच एहि मकानमे कोनो परिवर्त्तन करब ई सभ जरूरी नहि बुझलनि? सेहो आश्चर्ये अछि। फूलपुरक चट्टोपाध्यायक हवेलीमे शशितारा कतेको बेर रंग बदलबौलनि, कतेको परिवर्त्तन करौलनि ओकर। कतेको खिड़की तोड़ि केबाड़ बनबौलनि, कतेको केवाड़ हटा खिड़की बनल। आँगनमे देवाल ठाढ़ कऽ कोठली बनल अछि। भनसा घरक रूप कतेक बदलि गेल अछि? एम्हर वीरनगरक ई मकान अपन ओही पुरान रंग-रूपमे जादू घरक ताखपर बैसल अछि।

एक दिस चिनुआर, भण्डार, भोजन करबाक स्थान, बाँकी तीन दिस सुतबा-बैसबा लेल कोठली, सभ ओहिना। ओहि समय मुदा कतेक

लोक छल, कतेको गल-गुल केहन पिहकारी। ओहि अनुपस्थित लोक सभक लेल जेना आइ शशिताराक हृदयमे हाहाकार मचि गेलनि। सभसँ विचित्र बात ई जे एतुक्का ओतेक रास बात सभ शशिताराकेँ स्मरण छनि। यैह बात तँ हुनका आइ धरि नहि बुझबामे आयल छलनि। आइ ओ देखि रहल छथि, ताहि समयमे जाहि चीज-वस्तु सभकेँ जेना देखने छलीह, से ओहिना, ओही रूपमे ठाढ़ अछि। आँगनक कातसँ निकलयवला ओ गली जाहिसँ पछुआर दिस जाइत छल, ओसाराक उपरका भागक केवाड़क दुनू भागक मोट-मोट खाम्ह, केवाड़क पल्लापर पित्तरक गुलमेखवला काँटी।

सभ किछु वैह अछि। अन्तर बस एतबे जे तहिया सभ किछु नव-नव चमचम छल आ आइ सभ किछु बूढ़, लटकल, झुनकुट भऽ गेल अछि। देवालक पलस्तर घसा गेल छैक, चून-बालु ढहि गेल छैक, ईंट सभ दाँत निपोड़ने ठाढ़ छैक। किछु तँ अपन फराके राज्यविस्तार कऽ लेने अछि।

फेर वैह घर, वैह दलान, वैह खिड़की, वैह सीढ़ी, वैह ऑगन।

एहि स्मृतिकेँ शशितारा एतेक दिन कोन सन्दूकमे बन्न कऽ रखने छलीह? एतय तँ ओ यैह सोचि कऽ आयल छलीह जे ओ पूर्ण रूपसँ अपरिचित स्थानपर जा रहलीह अछि। सत्त तँ ई अछि जे एहि मकानक विषयमे हुनक मोनमे कोनो स्पष्ट धारणा नहि छलनि। मोन छलनि मात्र जमीनक बात। बहुत एहन जमीन अछि जकर दाम बढ़ि कऽ एतेक भऽ गेल छैक जे बीघाक दाम कट्ठा भरिमे भेटैछ आ एहन बहुतो महार्घ जमीनक आधाक मलिकिनी छथि श्रीमती शशितारा देवी।

एतय आबि कऽ जमीनक रूप हल्लुक पड़ि गेल आ यैह मकान हुनक मोनपर पसरि गेलनि अछि।

एहि ठाम अबैत काल स्टेशनसँ एतय धरिक सड़कसँ गामक रूप

बदलल बुझयलनि। जखन ओ एतय आबि रहल छलीह तँ ई बात अजीतकेँ कहनहुँ छलथिन। कहलथिन- “मोन तँ नहि पड़ैत अछि अजीत, मुदा जहिया घोड़ागाड़ीपर बड़का घोघ तनने अबैत रही, चारू कात झाड़-झंखाड़ छल, एकटा अलगे गमक छल, मुदा आब तँ बढ़ियाँ शहर भऽ गेलैक अछि। स्टेशनक कात सिनेमो बनि गेल छै।”

अजीत कहने छलथिन- “जमाना बहुत बदलि गेलै, पीसी। आब एतुक्का छौंड़ा सभ सिकस्त पैंट पहिरैत अछि आ देवालपर नारा लिखाइत अछि। अहाँक सासुरक जमीन सभ आब आधुनिक भऽ गेल अछि।”

भूमि आधुनिक भऽ गेल अछि से तँ ओ देखबे कयलनि अछि आ एहि आधुनिक जमीन सभक बीच देशक प्राण- चिड़ै अपन ओही पुरान रूपमे एहि खण्डहरक दोगमे आबि नुकायल अछि। यैह तँ अप्रत्याशित अछि आ जे अप्रत्याशित अछि सैह आनन्ददायक अछि।

ऊपर-नीचाँ नजरि खिरबैत शशितारा कहलथिन- “घरक हाल देखि लगैए जेना पछिला पचास-साठि सालसँ एतय मिस्त्री-मजदूर लगौले नहि गेल अछि!”

ओहि अधवयसू महिलाकेँ ई बात तड़ाकसँ लगलनि। रुष्ट भऽ बजलीह- “लगबय जोगर अछिए के जे लगाओत?”

हुनक खौंझपर शशितारा तमसाइत नहि छथि। हुनका आनन्द अबैत छनि। कहैत छथिन- “लगबयवला की बाहरसँ आओत? जे एतय रहैत छथि, भोग करैत छथि, वैह लगओता। जमीन, गाछी, पोखरि हमर ससुरकेँ किछु कम तँ नहि छलनि।”

‘हमर ससुर’ शब्दक उच्चारणमे बेस राजनीति छल। शशितारा जानि-बुझि कऽ एहि शब्दक उच्चारण कयने छलीह। कयने एहि कारणेँ छलीह जे ओ महिला जरि कऽ छाउर भऽ जाय।

से ओ जरि गेल छलीह। सोचय लगली, “तँ ई देवी एतय पूरा

तैयारी कैए कऽ आयल छथि। तँ सुना देलनि जे ओहो हिस्सेदारिन छथि। जँ हिनका एतयसँ उखाड़ल नहि गेलनि तँ छज्जीपर बढ़ैत बड़क गाछ जकाँ बढ़ि कऽ हमरा सभकेँ झाँझड़ कऽ देती। ओहो पाछू हटयवाली नहि छलीह- "तँ एही आशासँ सासुकेँ मरिते अहाँ दौड़ल अयलहुँ अछि? मुदा एकटा बात अछि। जीवन भरि जे अपनाकेँ एतय तबाह कऽ लेलक, तकरा संग ओकर बराबरी नहि होइछ जे कहियो हुलकीयो मारय नहि आयल हो, जे अपनापर कोनो चोट नहि सहने हो।"

"लिअऽ सुनू! ई स्त्री तँ बहुत झगड़ाहु बुझना जाइ छथि।" शशितारा ओकर बातक टीसकेँ हवा संग उड़बैत कहलथिन- "अहाँक बातक कोनो असरि नहि होइछ मुदा एहि बातसँ साफ बुझाइछ जे हमर दियरक पत्नीक भाग्य छोट छनि। एतबो होश नहि जे घर आयल पाहुनकेँ आदर-सत्कार, ताक-छेम करब उचित अछि। अहाँक मालिक कतय छथि? जे किछु कहबाक अछि से हुनकेसँ कहबनि। अहाँसँ व्यर्थक बकतूहलि कऽ इज्जत किएक गमाउ? अहाँकेँ किछु नहि अबैछ। ने ढंग ने तरीका। अस्तु, जाउ, मरू गऽ। हमरा की करबाक अछि! जेहन करब, तेहन पायब। ई कहू जे ओ दूटा नेना जे देखलहुँ से के अछि?"

देवाल दिस तकैत ओ स्त्री भरभरायल कंठसँ कहलकनि- "हमर नाति, नातिन।"

"बेटाक बच्चा अछि?"

"नहि बेटीक। जमाय नहि छथि।"

"हाय रे भाग्य! देखलहुँ ने, दोसराक हिस्साक माल हड़पब भगवानोकेँ नहि नीक लगैत छनि।" तुरंते ओ दोसर बोझ लादि दैत छथिन। "कयटा बेटी अछि अहाँकेँ?"

"यैह एक्केटा।" कहैत ओ स्त्री मुँह फुलौने आँगनमे सुखाइत कपड़ा उठबय लगली।

"तकदीरक खेल अछि। एकेटा तरकारी, ओहूमे नोन नहि। बेटा कयटा अछि?"

ओ स्त्री तमसायल तँ छलीहे, मुदा प्रश्नक उत्तर दऽ रहल छलीह। कहलकनि- "भगवानक कृपासँ दूटा अछि।"

"वाह! भागमन्त छी अहाँ। बेटा बिना घर-दुआरि सून लगैत छैक। ओ अछि कतय?"

"ओ एतय नहि रहैछ। कलकत्तामे नोकरी करैत अछि, रहितो अछि ओतहि।"

"ओ! आ बेटी? ओ कतय अछि?"

ओ स्त्री छोट सन आ काटल सन उत्तर देलकनि- "अछि। अयलहुँ अछि तँ सभकेँ देखबे करब।"

शशितारा स्थिर होइत छथि। कहैत छथिन- "बात तँ ठीके अछि। अयलहुँ अछि तँ सभकेँ देखबे करब। मुदा जन्मक हम विधवा, हमरा सोझाँ निकलबामे अहाँक बेटीकेँ कोनो कठिनता नहि होयबाक चाही आ हम तँ कोनो आन नहि छी, पितिआइनि छियैक। भेट नहि होइत अछि अवश्य मुदा एकर ई माने नहि जे सम्बन्धे मेटा जाय। अस्तु, अहाँक नाम की अछि?"

मुँह फुलौने तँ छलीहे, कहलकनि- "हमरा सनक लोकक कोनो नाम होइत छैक?"

"माय-बाप तँ रखनहि होयता, सैह कहू।"

"हुनक देल नाम हुनकहि संग मेटा गेल अछि।"

"तखन तँ कोनो बात नहि। ठीके अछि, छोटकी कनियाँ कहब। आ कि मझिली छी- अहाँ? ई सभ कतेक भाइ छथि? हमर सतबा सासुकेँ कतेक बेटा छनि?"

"बस यैह एकटा।"

"वाह रे तकदीर! तँ ओ छथि कतय?"

"स्कूलमे पढ़बैत छथि। चारि बजे अओता।"

शशितारा जेना आकाशसँ खसली- "हे भगवान! एहि बुढ़ारीयोमे चैन नहि। विद्यार्थी पढ़ा कऽ पेटक बन्दोबस्त करय पड़ैत छनि हुनका? अहाँक बेटा पाइ नहि पठबैत छनि?"

आब छोटकी कनियाँसँ नहि रहल गेलैक। कहलकनि- "सभटा रहस्य अबिते जानि लेब की ठीक रहत दीदी?"

शशितारा एहू अपमानकेँ नहि ओढ़लनि। सहज-सरल भावसँ ओ कहलथिन- "देखू कनियाँ, पुस्तक पढ़बासँ पहिने अ, आ, क, ख सीखऽ पड़ैत छैक। अहाँ सभहक नाम, परिचय, आचार, आचरण जखन हमरा किछु बुझले नहि, तँ अहाँकेँ अपन कोना बूझब, कोना मानब? यैह बूझब अ, आ, क, ख अछि। ओहि समय देखल लोकमे एकटा सुन्नर बालक मोन अछि जकरा दऽ लोक कहलक, सतबा सासुक बेटा छनि। ओ लगभग हमरे वयसक छल। वैह बालक अहाँक स्वामी छथि कि नहि, सेहो नहि बूझल अछि हमरा। हुनक नाम की छल, आइ सेहो मोन नहि। सासुक यैह एकटा बेटा छनि आ बेटी?"

"ननदि चारिटा छलीह- सब मरि-खपि गेलीह।"

"पुण्यात्मा छलीह, से मरि गेली। अच्छा, पहिलुक सासुकेँ कोनो बेटी छलनि?"

"हमर सासुकेँ तँ आओर केओ नहि। पहिली वालीकेँ तँ सुनने छलहुँ जे एकेटा बेटा छलनि, वैह तँ... ।"

"ओहि बातकेँ तँ हम जनैत छी छोटकी कनियाँ। पहिली सासुकेँ बेटाक निशानीक ज्वलन्त उदाहरण तँ हम, अहाँक सोझाँ ठाढ़ छी। अच्छा ई कहू, पानि कतयसँ अबैत अछि? ट्यूबेल अछि कि इनार?"

"किछु नहि अछि। पोखरिएसँ काज चलबय पड़ैत अछि। इनार छल, भथि गेल अछि।"

शशितारा माथ पिटलनि- "मरि जायब हम, आजुक जमानामे रहबाक ई कोन तरीका अछि? अहाँक चारू कात एतेक पैघ शहर-बजार पसरल अछि। पीबाक पानि कतयसँ अबैत अछि?"

"पड़ोसियाक ट्यूबेलसँ।"

छोटकी कनियाँक मोन एहन खट्टा भऽ रहल छलनि जे बूढ़ीक एकोटा प्रश्नक उत्तर देबाक मोन नहि भऽ रहल छलनि, मुदा ओ सभ बातक सही उत्तर देने जा रहल छलीह।

हुनका मोनपर अबैत-जाइत एक-एक भावनाकेँ शशितारा सहजतासँ पढ़ि रहल छलीह आ मोनहि मोन हँसि रहल छलीह। सोचि रहल छलीह जे एखन की खौंझयली अछि? बुझना तँ तखन जयतनि, जखन सम्पत्तिक हिस्सा माँगबनि? देखबाक तँ ई अछि जे तखन ई की करैत अछि! एकर रहन-सहन तँ नीच जकाँ छैक। एहन फटेहाल रहबाक की बात छैक? दू बीघा जमीन बेचि लिअऽ आ घरक सुधार कऽ लिअऽ। चापाकल लगाउ, नहयबाक लेल कोठली बनबा लिअऽ। से नहि, खेतसँ धान अबैत अछि, खाइत अछि आ पड़ल रहैत अछि। बेटो सभ अजीब छैक। जा कऽ कलकत्तामे जमल अछि, देखइयो नहि अबैछ। सोचितो नहि अछि जे कोन दिन घरक नीचाँ बूढ़ माय-बाप पिचा कऽ मरि जायत। विधवा बहिन अलगे गर्दनि बान्हल छै। ओकरा बच्चो छै, एकाधटा जँ पोखरिमे डूबि मरतैक तँ की होयत?

सोचलनि मुदा बजलीह नहि। मात्र एतबे कहलथिन- "जाइ, रौद रहिते पोखरिमे नहा आबी।"

छोटकी कनियाँ कहलकनि- "एतेक अबेर कऽ नहायब?"

"नहायब नहि तँ की, रेलगाड़ीक छूति लपेटने रहब? अच्छा, ई

कहू, एतहि कतहु लगमे एकटा काली मन्दिर छल ने?"

अरे! इहो मोन छनि शशिताराकेँ! ओहि बेर जखन आयल छली, तखन वर-कनियाँकेँ गठजोड़ी कऽ मन्दिर लऽ जायल गेल छलनि।

छोटकी कनियाँ बजली- "मन्दिर अछि, मुदा कालीक नहि, सिंहवाहिनीक।"

"हैत। अछि ने ओ मन्दिर?"

"मन्दिरकेँ कतय जयबाक छै? सभ दिनक वस्तु अछि, सभ दिन रहत।"

"वाह! कतेक मधुरभाषी अछि हमर दियादिनी। लगैए जेना पाथर फेकि रहल अछि। बड़ भाग्यशाली अछि हमर दियर!"

गमछा लेने शशितारा पोखरि दिस बढ़ैत छथि।

एतय हुनका बहुत समस्याक सामना करय पड़तनि। तइयो रहैए पड़तनि। अपन हिस्साक जमीनपर कब्जा कऽ ओकरा बेचबाक उपाय करय पड़तनि। कोनो खरीदारक खोज करय पड़तनि। के कीनत जमीन?

राजबाला हरान छलीह। शशिताराकेँ पोखरि देखा छोटका नातिकेँ स्कूल दौड़ौलनि। ओकरासँ नानाकेँ कहबौलथिन, जे ओ घर शीघ्र आबथि। फुलपुरसँ हुनक भौजी अयलथिन अछि।

ओ शशिताराकेँ कहने छलथिन जे हुनक बेटी घरेपर छनि मुदा ओ घरपर छलैक नहि। घरपर ओकर मोन लगिते नहि छलैक। ओ तँ सदैव टोला-महल्लाक सैर करैत रहैत छलि।

भवेश बन्दोपाध्यायक दोसर विवाहक पुत्र रमेश बन्दोपाध्याय कोनो जमानामे सत्ये बड़ सुन्दर छलाह, मुदा आइ हुनका देखि कऽ यैह लगैछ जे ओ लालटेन-धुआँ सन कारिख लागल चिमनी मात्र छथि।

सोन सन काया आब किछु नहि रहि गेल छनि। रंग जरि कऽ ताम सन भऽ गेल छनि, शरीरक माँसु लटकि गेल छनि। केश बर्फ सन उज्जर!

नाति जखन जा कऽ कहलकनि जे हुनक भौजी अयलथिन अछि तँ ओ अकबका गेलाह।

"हमर भौजी? अयलीह अछि? कतयसँ?"

"फूलपुरसँ।"

रमेश सिहरि उठलाह। आब संदेहक गुंजाइश नहि रहलनि। पट्टीदार हिस्सा माँगय आबि गेलनि अछि। आश्चर्य तँ ई जे एही समस्यासँ बचबाक हेतु ओ मायक मृत्युक खबरि हुनका ओतय नहि पहुँचौने छलाह। ओना अपना दिससँ ओ एक बेर बात उठौने छलाह मुदा जे बेटा गामक एहि जमीनकेँ किछु बुझिते नहि छनि, वैह विरोध कैलकनि, मना कैने छलनि। कहने छलनि- "नहि, सुनतीह तँ अओतीह। अओती तँ अवश्य, धूमधाम की देखती, पता लगओती आ अन्तमे अपन हिस्सा मँगती। एतेक सालमे जनिका कहियो देखलहुँ नहि, हुनक हिस्सा कोन बातक?"

"हमहूँ तँ कहियो बजौलियनि नहि। जहिया तोरा सभहक विवाह भेल छलैक, उपनयन भेल छलैक, कहियो तँ नहि बजौलियनि। ओहि समय बजौने रहितियनि तँ किंसाइत आबिए जइतथि।"

"से कोना होइत! सुनने तँ छलहुँ जे अहाँक विवाहक समय केओ गेल छलनि कहय, तँ ओहि समय हुनक पिता की दादा, जे रहल होथि, ओकरा बाहरेसँ भगा देने छलथिन।"

ओकर ई कहब सत्य छल।

"तँ फेर की छल? कर्त्तव्य-बोधकेँ गर्दनि दाबि दी।"

राजबाला सेहो कहने रहथिन जे नाङरि काटि कऽ घड़ियारकेँ घर बजौनाइ कोनो बुधियारी नहि। ई मूर्खक काज होयत।

तेँ रमेश मास्टर बुधियारक भूमिका निमाहबामे लागि गेल छलाह।

नातिक सुनाओल समाचारसँ पहिने तँ किछु काल सुन्न बैसल रहलाह रमेश मास्टर, फेर तुरंत घर दिस विदा भेलाह। राजबाला दु रुखेपर भेटि गेलथिन। रमेश इशारासँ पुछलथिन- "कतय छथि?"

"नहा कऽ पूजा करय बैसलीह अछि।" –ई राजबाला मुँहसँ नहि, इशारासँ कहलथिन।

एम्हर-ओम्हर देखि रमेश आस्तेसँ पुछलथिन- "केहन छथि?"

"कोना कहू?"

"पहिने सन छथि, कि बदलि गेलीह अछि?"

"पहिने तँ हम नहि देखने छलियनि।"

"से तँ ठीके।"

अपन कोठलीमे आबि रमेश बेर-बेर पूजा घर दिस देखथि आ शशितारापर रोब देखेबाक तागति जुटबय लगलाह।

लग आबि राजबाला कहलथिन- "हाल-चाल देखि तँ लगैए जे बड़ खरूश मिजाजक छथि।"

"सत्तेमे?" रमेश मास्टरक मुँह उतरि जाइत छनि।

"कोना बुझलियै?"

"गप्पक लहजासँ। हुनक बातसँ तँ तेना लगैए जेना कोनो मलिकिनी गरीबक घर आबि गेल होथि।"

"किए? एना किएक कऽ रहल छथि?"

"किएक कऽ रहल छथि, से तँ अहीँ जानी। हम तँ जे देखलहुँ, से अहाँकेँ कहि देलहुँ।"

"कहलनि की?"

"की कहलनि, से सविस्तर कहबाक एखन समय नहि मुदा हुनक गप्पसँ ई साफ बुझना गेल जे हमरा माछी अथवा मच्छरसँ बेसी नहि

बुझैत छथि।”

रमेशक सिट्टी-पिट्टी गुम। “एना, से किएक?”

“कहलहुँ तँ, जे कारण आ अर्थ अहीं जानी।”

“वाह! बड़ नीक कहलहुँ। हमहीं सभ बात लेल दोषी किएक बनू? हम कोनो हुनका बजबय गेल छलहुँ?”

“के अनलक अछि, के नहि, से तँ अहाँ जानी मुदा ई तँ देखबे कयलहुँ अछि जे ओ बोरिया-बिस्तर, बर्त्तन-बासन सभ लऽ कऽ अयलीह अछि।”

रमेश मास्टर पंखा हौंकि रहल छलाह। अनचोके पंखा छोड़ि कहय लगलाह- “बुझा नहि रहल अछि जे की सोचि कऽ अयलीह अछि ओ।”

“अहाँकेँ बुझबामे नहि आबि रहल अछि?” मुँह बिचका कऽ राजबाला कहलथिन- “ओ सुनलनि अछि जे माय नहि रहलीह, बस आओर की? आब भू-सम्पत्ति बँटबारा करू। बहिस्से-बराबरक हिस्सेदार जे छथि ओ।”

रमेश मिमियाइत बजलाह- “मुदा हुनका तँ धियो-पूता नहि छनि।”

“नहि छनि तँ हिस्सा छोड़ि देतीह। एहन तँ नहि बुझना जाइछ।”

रमेश सहमैत कहलथिन- “से कहैत छलीह की?”

“कहलनि तँ नहि मुदा कहती। कहलनि अछि, असल व्यक्तिकेँ कहती, हमरा सन कीड़ा-मकोड़ाकेँ नहि।”

कहैत मुँह बिचका छोटकी मलिकिनी चलैत बनली। आब हुनकर काज पूरा भऽ गेल छलनि। हुनका छुट्टी भेटलनि। आब जानथि दियर आ हुनक भौजाइ।

पूजा कऽ कऽ निकलितहि सोझाँ-सोझी, किएक तँ रमेश ताबत हरान भऽ पूजा-घरक बन्न दरवाजा धरि आबि गेल छलाह।

दुनू अकचकयलनि। "के?"

रमेश प्रणाम करैत कहलथिन- "हम, बड़की भौजी।"

अशीर्वाद दैत शशितारा कहलथिन- "बउआ जी?"

ओकर बाद शशितारा पहिल सवाल कयलथिन- "की यौ, अहाँक ओ रंग कतऽ गेल?"

रमेश चौंकलाह- "रंग? केहन रंग?"

शशितारा हँसय लगलीह। बजलीह- "अकचकयलहुँ किएक बउआ जी? अरे, जखन कनियाँ बनि एतय आयल रही, तखन हम एकटा छोट आ बहुत सुन्दर, बहुत गोर, चान सन नेना देखने रही। सुनलहुँ जे वैह अहाँ छी। आ जखन भाइ नहि छथि तँ अहीँकेँ होयबाक चाही। तेँ पुछलहुँ जे अपन ओ गोर रंग की कयलहुँ अहाँ?"

आब रमेश हृदय खोलि कऽ हँसय लगलाह। लग बैसल छोटकी मलिकाइनिक करेज धक्-सँ रहि गेलनि। एहि तरहेँ रमेश कतेक जमाना पहिने हँसैत छलाह।

हँसैत-हँसैत रमेश कहलथिन- "वाह भौजी, अहूँ खूब छी। ओहि छोट सन, सुन्दर सन, चान सन नेनाकेँ आब अहाँ तकैत छी? तखन तँ हमहूँ कही, जे रूपकथाक राजकुमारी सन रूपवती ओहि कनियाँकेँ अहाँ कतय छोड़ि अयलहुँ बड़की भौजी? हम नेना सभ जकर नाम रखने रही 'परी कनियाँ'।"

शशिताराक जड़ि जेना डोलय लगलनि। हुनका घुरमी जकाँ आबि गेलनि। एकर कारण ई छल जे आइ एकादशी व्रत छल?

मुदा निर्जला व्रत आइ धरि शशिताराकेँ नहि झकझोरने छलनि। ओ जोशमे आबि कहलथिन- "वाह, की कहलहुँ बउआ जी।"

खुजल केवाड़सँ चौक दिस तकैत रमेश अतीतक स्मृतिमे जेना हेरा

गेलाह। कहलथिन- "सत्ते कहैत छी भौजी! ओहि दिनक बात आइ धरि ओहिना मोन अछि। भोरेसँ एहि चबुतरापर अरिपन देल जा रहल छल, किएक तँ कनियाँ आबयवाली छलीह। धीया-पूता सभ हुलसि रहल छल। फेर मोन अछि जे शंख बाजल छल। हम सभ जतय जे रही, दौड़ैत अयलहुँ आ सत्ते कहैत छी भौजी, कनियाँ देखलहुँ तँ मुँह खुजले के खुजल रहि गेल। ई तँ रूपकथा वाली अछि। ओहिना सोन सन काया, मेघ सन केश, एहन शोभा जेना रानीक रानी हो।" वीरनगर हाइ स्कूलक हेड पण्डित रमेश बन्दोपाध्याय सपनामे हेरायल सन बाजि रहल छलाह- "ओहि रूपकथाक राजकन्याक सभ अंग सोनसँ लदल। अहाँकेँ नहि मोन होयत। बादमे हमर छोट बहिन पुन्नी आ हम अहाँ लग बैसि अहाँक अद्भुत गहनाक नाम पूछने रही। मोन अछि अ हाँकेँ?"

शशितारा हँसलनि। कहलथिन- "ओ तँ नहि मोन अछि, मुदा ओ छोट नेना अवश्य मोन अछि जकर आँखि शीशा सन चमकैत छलैक आ केश रेशम सन छलैक।"

रमेश बन्दोपाध्याय कहलथिन- "सभ तँ नहि मुदा एकाध नाम आइयो स्मरण अछि। एकटाक नाम बाजूबन्द कहने रही आ एकटाक नाम नौलखा।"

बगलवला कोठलीमे बैसल राजबाला हिनका दुनूक गप्प सुनि रहल छलीह आ जरि रहल छलीह। सोचैत छलीह- "दियर-भौजाइमे बड़ रसगर गप्प चलि रहल अछि। शुरूएमे ढील देब तँ आगू की कसब? भौजाइकेँ देखलनि की होश गमा बैसलाह! अपन बेटी सुख-भाग गमा कऽ घर आबि बैसल अछि, कहियो नहि देखलहुँ जे हँसि कऽ ओकरासँ दूटा बात कयने होथि। डाँट-दबारक अतिरिक्त कोनो बात नहि। मात्र पूछब, 'कतय गेल छलैं? जखन-तखन घरसँ बाहर किएक जाइत छैं? भगवान जे तकदीरमे लिखलथुन, तहिना रह।' ओकरा लेल ई सभ आ भौजाइकेँ देखि मीठ-मीठ बात फुराइत छनि। मुदा इहो मोन राखथु जे ई

स्त्री साधारण नहि अछि। जँ अहाँ ई सोचलहुँ अछि जे अपन लल्लो-चप्पोसँ हुनका प्रसन्न कऽ लेब, तँ ई पैघ गलती कऽ रहल छी।” बन्न केबाड़सँ राजबाला कान सटबैत छथि।

सुनबामे अबैत छनि- रमेश मास्टर विह्वल भऽ कहि रहल छथिन- “कनियाँ अयली, चबुतरापर राखल दूध-अलता भरल थारीमे ठाढ़ भेलीह। हम बच्चा सभ निश्चय कैलहुँ जे हुनका परी कनियाँ कहब। एकहि जीवनमे मनुक्खक कतेक बेर जन्मान्तर होइत छैक। आजुक अहाँकेँ देखि कऽ के कहत जे अहाँ वैह छी, हमर सभहक परी- कनियाँ!”

राजबाला उठि कऽ खिड़कीक सोझाँ आबि कऽ देखैत छथि जे बड़की कनियाँ ओसाराक सीढ़ीपर बैसल छथि आ दियर हुनक बगलमे बैसल छथि। एहि सात-आठ सीढ़ीक नीचाँमे चबुतरा अछि। ऊपरवला सीढ़ीपर बैसल शशितारा हेरायल-भुतिआयल सन ओहि चबुतराकेँ देखैत रहलीह। सम्भवत: ओहि दिनक बनायल अरिपनक रेघाकेँ तकैत रहली, दूध आ अलता भरल पाथरक ओहि थारीकेँ जाहिपर मौर बान्हल वरक पाछू-पाछू आबि ठाढ़ भेल होयती। रूपकथाक राजकुमारी जकरा गर्दनिमे नौलखा हार, माथपर मंगटीका, हाथमे चूड़ी, कंगन, बाजूबन्द, जकर सभ आंगुरमे औंठी, पैरमे चरणचूड़ होयत। एही आँगनक इतिहासमे ओहि लावण्यक स्मृति संरक्षित अछि। ई चबुतरा साक्षी अछि, ओहि दिनक परिवेशक। एकर दोसर साक्षी अछि, परिस्थितिक मारल ई रमेश मास्टर। ओहि दिनक स्मरण हिनकर स्मृति-पटमे संरक्षित अछि।

शशितारा एतय आयल छलीह, बहुत पहिने हेरायल खजानाक खोजमे। अबितहि खजाना हाथ लागि गेलनि की? जँ नहि, तँ एतय अबितहि शशितारामे एतेक परिवर्त्तन, एतेक शान्ति, एतेक धवलता कतयसँ अयलनि?

रमेश मास्टरक झुर्रीसँ भरल मुँहपर दृष्टि स्थापित कऽ शशितारा कहलथिन- “ओहि जन्मक बात ककरो मोन नहि अछि, की बउआ जी?”

“नहि! सौंसे दुनियाँ जनैछ जे रमेश मास्टर एहने कारी खट-खट झुर्रीवाला अछि, सभ दिनसँ एहने। जेहन हुनक घरक हाल तेहने हुनको हाल।”

शशितारोकेँ लगलनि जे रमेश हुनके मोनक बात कहि देलकनि अछि। कहलथिन- “सहीमे, एहि घरक दशा हमरे सन भऽ गेलैक अछि।” कहि कऽ चुप भऽ गेली ओ। जाहि शशिताराक मुँहसँ बातक अविरल धारा सन बहैत छल ओ आइ चुप छथि। बड़ विचित्र बात अछि। अपन एहि निस्तब्धतापर शशितारो चकित छलीह। मकानक ई दशा देखि ओ दु:खी भऽ रहलीह अछि। मात्र दु:खीए नहि , अपनाकेँ अपराधी मानि रहलि छथि।

मुदा किएक? एहिमे हुनक कोन दोष? शशितारा एहि घरक के छथि?

एहि जर्जर शरीर रमेश मास्टरक संग अपनाकेँ जोड़ि ‘हमर’ शब्दक प्रयोग कोना कयलनि?

ताशक चौखरीसँ हाथक पत्ता फेकि उठि अयली अन्नपूर्णा। पाछूसँ भीतर आबि मायकेँ तकलनि। देखलनि जे माय घरक चौकीपर चुपचाप पड़लि छथि। लग जा कऽ कहलथिन- “की बात छौ माँ, ई की सुनि रहल छी?”

करोट फेरैत राजबाला कहलथिन- “बात नीके अछि। हाल-चाल आओर बढ़ियाँ। एहि परिवारक बड़की मलिकिनी छथि। एकटा राजा गेलाह, दोसर राजाक आगमन भऽ गेलनि। दासी जे छल से दासीए रहि गेल।”

मुँह टेँढ़ करैत अन्नपूर्णा बजली- “की कहैत छेँ माँ! ने किछु कहब ने पूछब, आबि कऽ ई एतय राज करती? की अधिकार छनि हिनकर?”

“अधिकार तँ बहिस्से-बराबरक छनि।”

"छनि तँ ठीक छै। करथि मोकदमा। जाथि अदालति। ओतयसँ बहिस्से-बराबरक बात मानल जायत, तँ देखल जयतैक। मुदा अहाँ एखन पड़ल किएक छी?"

भरल साँझमे पड़ल रहबाक सन अधलाह काज करैत देखल गेलोपर राजबाला शान्त होइत कहलथिन- "जखन माथपर वज्रपात होइत छैक, तखन आदमी पड़िए रहैत अछि। बेर-अबेर नहि देखैछ। अदालति-तदालतिकेँ आब कोनो गुंजाइश नहि बचल, अन्नो। तोहर बाप तँ बड़की कनियाँक दर्शन करिते हुनकर पैरपर ओंघराय लागल छथि।"

"की माने?"

माने ई जे ओ कोनो जमानाक सड़ल खिस्सा, जखन एकटाक वयस नौ छलनि आ दोसराक सात, तहियाक स्मृतिमे दुनू आकंठ डूबल बैसल छथि।

"तँ की भेलै?"

"की भेलै, ई तँ अबेर-सबेर बुझबामे आओत। ई व्यक्ति आब मोकदमा तँ कऽ चुकल आ रानीजी संगमे ओकील भतीजाकेँ लऽ कऽ अयलीह अछि।"

"ओकील?"

"हम की अनेरे बजैत छी? देखिते बूझि जयबैं जे केहन लोक अछि।"

"हमरा कोन काज! हम किअए देखय जायब?"

"तोरा नहि, तोरा बापकेँ चिन्ता छनि। तीन बेर पूछि चुकला अछि, अन्नो आयल कि नहि?"

"ओ एतय रहबाक विचारसँ अयलीह अछि की?"

"अयलीह अछि तँ ओही विचारसँ। बोरिया-बिस्तर सभ किछु लऽ

कऽ अयलीह अछि।"

अन्नूपर्णाकें ई सभ बहुत बेजाय लगैत छनि। ई कोन आफदि थिक!

एक तँ पहाड़ सन दबंग दादीक आगू माय कहियो माथ नहि उठा पओने छलीह। ओ जे मरली, तँ ई कोन दुष्ट ग्रह सन आबि गेलीह। ओ बजली- "हुनक एतय रहब-सहब नहि भऽ सकत। एखने हुनका उखाड़ि फेक।"

"तोँ उखाड़ि सकैत छैं तँ उखाड़, मुदा जँ तोहर बाप हुनक संग देथिन तखन?"

"धुत्त! की विचित्र बात करैत छैं? एहन कहियो भऽ सकैत छैक? जनैत छी, बाबूजी सभ दिनसँ लजकोटर छथि। कठोर बात ककरो सोझाँ नहि कहि सकैत छथि। एकटा काज करी, बड़का भैया आ छोटका भैयाकें किएक ने बजा ली?"

"देखल जयतैक।" राजबाला रुष्ट होइत बजली- "तोहर दुनू भाइए हमर सभहक कोन ध्यान रखैत अछि? एतुक्का जर-जमीनकें तँ ओ सभ किछु बुझिते नहि अछि।"

अन्नपूर्णा बुझनुक बनैत कहैत अछि- "ओ तँ दादीक चलते। ओ कहैत छलीह जे ईंच भरि जमीन नहि बेचल जायत। स्टेशनक कातक जे जमीन अछि, ओकरा नहि बेचू, तँ की दाम अछि? अहीं कहू? आब दादी नहि छथि। आब ककर डर? ओहि जमीनके बेचलासँ.. ।"

"डर? आब हिनकासँ डेराय पड़त।" बजलीह राजबाला- "जँ आब ई हिस्सा-बँटबाराक झमेला करती, जँ कहथि जे जमीन नहि बेचल जायत, तँ फेर हमर जिनगी नष्टे भऽ जायत। तोहर बापसँ सुनलहुँ जे दू वर्षक पैघ छथि, मुदा देखबासँ नहि लगैछ। तोहर बापे पैघ लगैत छथुन, ओ छोट। धनिकक बेटी छथि, नीक खायल-पीउल छनि, नीक पालन-

पोषण भेल छनि।”

“पाइवलाक बेटी छथि, तँ ओतहि जाथु ने। एहि निर्धन सासुरपर की चढ़ाइ करय आबि गेलीह?”

“ताहिसँ की होइछ? ओकील भतीजा बुझौने होयथिन जे ओ ओकर हकदार छथि, तँ फेर छोड़ती किएक?”

अन्नपूर्णाक बच्चा भूखसँ नितुआन भेल मायक आगू-पाछू डोलि रहल छल। माय आ नानी तँ गप्प करबामे लागल छलीह। एतबेमे रमेश मास्टर मधुरक हाँड़ी लेने घर अयला। बच्चाकेँ कहलथिन- “अबैत जो, खाइ जो। बड़की नानी तोरा सभ लेल मधुर मँगौलथुन अछि।”

उठि बैसली राजबाला। बजलीह- “दियरकेँ हथिअएबाक नीक बाट निकाललनि अछि। खाइ जो धीया-पूता! धनीक नानीक दान, पैघ-पैघ मधुर! गरीब नानी तँ जिलेबी-बुनियाँसँ बेसी किछु नहि दऽ सकलथुन।”

रमेश मास्टर बजला- “एहि छोट धीया-पूताक सोझाँ जहर किएक उगिलैत छी? देखू ने, केहन छथि जेठकी!”

मायक बदला अन्नो जवाब देलकनि- “ओ केहन छथि, से तँ हुनक अयबाक ढंगेसँ पता चलि गेल। एक पाँतीक चिट्ठीयो नहि। बस, जखन मोन भेलनि, चलि अयली।”

रमेश मास्टरकेँ एकर समुचित उतारा नहि सुझलनि। बजला- “भऽ सकैत छैक, अयबाक मोन भेल होइनि।”

“एतेक वर्षमे कहियो मोन नहि भेलनि आ दादीकेँ मरिते मोन भऽ गेलनि?”

अन्नोक तर्क जोरगर अछि।

तइयो रमेशकेँ लागि रहल छलनि जे एतेक दिनुका बाद एहि घरमे

एहन व्यक्ति आयल अछि जे सही अर्थमे मनुक्ख अछि आ साधारणसँ बहुत ऊपर अछि। हुनका एहन लागि रहल छलनि जे ओ हुनका लग सुरक्षित रहता। एखन धरि मायक आँचरसँ सुरक्षित रमेश मास्टर एहि वयसमे आजादी नहि, एकटा दोसर आँचरक सुरक्षा लेल बेलल्ल छलाह। सुरक्षाक ई निश्चिन्तता हुनका अपन पत्नी अथवा नेना सभसँ कहियो नहि भेटलनि। सासुक शासनसँ तंग पत्नी हुनका सदैव उलहने दैत रहल छलथिन आ हुनक डरपोक स्वभावकेँ दोषी ठहरबैत छलथिन।

बूढ़ माय ककरा नहि रहैछ? एकर माने ई तँ नहि जे ओकर बेटा बुढारीयोमे नाबालिगे बनल रहय।

अन्नो बजली- "ओ छथि कतय?"

रमेश कहलथिन- "हमरा संग सिंहवाहिनीक मन्दिर गेल छलीह। सन्ध्या आरती देखबा लेल ओतहि रुकि गेलीह अछि। हमरा कहलनि, मधुर लऽ बच्चा सभकेँ देबाक हेतु। हम कहलियनि, 'दस टकाक मधुर के खायत?' नहि मानलनि। तँ हम कहलियनि जे आइ पाँच टकाक लऽ लैत छी, काल्हि फेर पाँचक लऽ लेब।"

"टका छीटि रहल छथि!" राजबाला व्यंग्य करैत बजली- "पानिसँ पानि रोकती।"

रमेश मास्टर दु:खी होइत छथि। शुरूएसँ राजबाला एतेक द्वेष , विरोध किएक कऽ रहल छथिन? की आवश्यकता छनि? आखिर, ओहो तँ हकदार छथिए। ओहो तँ एही परिवारमे बिआहि कऽ आयल छथि। एतेक दिन धरि कहियो किछु नहि लेलनि ओ, तँ चाहब जे कहियो किछु नहि लेथि, कतेक उचित अछि? एहन आशा किएक रखैत छथि राजबाला?

"हुनका फेर आनय जाय पड़त?" अन्नो बजली।

रमेश मास्टर रुष्ट होइत बजला- "हुनका नहि बाज, बड़की माय

कहुन, अन्ना। यैह उचित छौक। मनुक्ख अपने आचरणसँ पैघ-छोट होइत अछि। ओ हमरा मना कयने छलीह। कहने छलीह, जाहि बाटसँ एक बेर चलैत छी से कहियो नहि बिसराइछ। अहाँ अयबाक कष्ट नहि करब। मुदा हम हुनक ई बात मानि चुप बैसल नहि रहब। जायब, आरतीक घड़ी-घण्टा सुनिते चलि जायब।"

घुरबा काल एम्हर-ओम्हरक गप्प करैत रहली शशितारा- "कतेक विचित्र बात अछि बउआजी! एतय हम कहियो अयलहुँ नहि, बैसलहुँ नहि, मुदा आइ एहन लागल जेना कतेक बेर एहि स्थानपर बैसि आरती देखलहुँ अछि। भगवतीक मुँह सेहो एतेक परिचित लागल जेना प्रतिदिन देखि रहल होइ। असलमे नेनपनक स्मृति पाथरक लकीर सन होइछ। जहिया कनियाँ बनि आयल रही, तहिया गेठजोड़ी कऽ एही मन्दिर आनल गेल छलहुँ। आरतीक घड़ी-घण्टा बाजल छल। आजुक आरतीक समय हमरा लागल जेना ओही दिनुक घड़ी-घण्टा आइयो बाजि रहल हो।"

सुनि कऽ आनन्दित भऽ रहल छलाह मास्टर साहेब। एहन गप्प सुनबाक अवसर कहाँ भेटल छलनि। हुनक पत्नी आ बेटीक गप्प करबाक ढंग दोसरे छलनि- बुड़बक जकाँ, रुच्छ आ अनोन।

की शशिताराक गप्प करबाक ढंग एतय वीरनगर अबिते बदलल नहि जा रहल छनि? वैह आइ धरि कहिया एहन भीजल स्वरमे रसपाक गप्प कैने छलीह?

एकरे सम्भवत: अपनत्व कहल जाइछ। जखन केओ अपन भेटैत छैक तखन एहि तरहक गप्प स्वत: भीतरसँ अबैत रहैत छैक।

रमेश मास्टर कहि रहल छलाह- "एतेक दिन धरि कतय छलहुँ अहाँ आ कतय रही हम, मुदा देखू, जहिना सोझाँ-सोझी भेल, अहाँ केहन परिचित आ केहन अपने सन लगलहुँ।"

शशितारा उत्तर देलथिन- "एकर कारण ई अछि बउआजी जे अहाँ

भला आदमी छी। दोसर केओ रहैत तँ बैरन आपस कऽ दितय।"

"आपस कऽ दितय?"

"नहि करैत? हिस्सा माँगयवलाकेँ कोन बुधियार पीढ़ी ओछा कऽ बैसबैत अछि?"

दुनू हृदय खोलि हँसैत छथि।

बाट चलैत लोकमे सँ एक-दू गोटा घुमि क ऽ देखैत छथि। ओहीमे सँ एकटाकेँ बजा कऽ रमेश मास्टर कहैत छथिन- "हे, सुनह भाइ सुनह। हमर पैघ भौजी अयलीह अछि। हमर घरक जेठ पुतोहु। हमर ओ भाइ जे कमे वयसमे... ।"

"हँ, बूझल अछि। सुनने छी जे अहाँकेँ एकटा जेठ सतबा भाइ छलाह।"

"हँ, बस वैह। फूलपुरक चट्टोपाध्यायक बेटी छथि। जनैत छह ने? अरे, हुनक नाम सभ जनैत अछि। बहुत प्रतिष्ठित लोक छथि। ओतहि रहैत छलीह। आब हम सभ मोन पड़लियनि तँ भेँट करय अयली अछि।"

रजनी झुकि कऽ प्रणाम कयलकनि। कहलकनि- "वाह, बहुत नीक। एक दिन आयब। रहतीह ने एखन?"

शशितारा जवाब देलथिन- "देखा चाही, अहाँ सभ एतय रहय दैत छी कि नहि? वीरनगरक वीरक प्रताप केहन अछि, से नहि जानि?"

"बड़की माय, अहूँ की बजैत छी! ई अहाँक ससुरक ड्योढ़ी थिक। हम के होइत छी रोकयवला?" रजनी बाजल। फेर ओ रमेश मास्टरकेँ कहलकनि- "काल्हिए आयब कका। अहाँक पुतोहुकेँ लऽ अहाँक घर काल्हिये जायब।"

"अवश्य। निश्चित अबिहऽ।"

सभहक मोनमे कौतूहल। कौतूहल होयबाक कारण ई जे पैघ

मलिकिनी बिना किछु कहने धमकि गेलीह। दियरक संग एतेक सम्पर्क, एतेक स्नेहिल, कोना भऽ गेली! एहन घुलि-मिलि कोना गेली जे भरि रस्ता हँसैत-बजैत चलल जा रहल छथि। तँ की मास्टरे साहेब बजौलथिन अछि? मायक नहि रहलापर गृहस्थी सम्हारबामे हिनकर पत्नी कुशल नहि छनि। हुनका ने घर सम्हारबाक ढंग आ ने सामाजिकताक ढंग।

यैह सम्भव अछि।

"लगैत अछि मास्टरजी बिना ककरो कहने स्वयं चुपचाप लऽ अनलथिन अछि।"

ओम्हर घरपर माय-बेटी बेचैन छथि। आरती करवन भऽ गेल। एरवन धरि ओ सभ किएक नहि अयलाह अछि? ओ चतुर स्त्री जकर भातिज ओकील अछि, कहीं ठकुरवाड़ीएमे ने हिनकासँ किछु लिखबा रहल हो? ने किछु कहब, ने किछु पूछब, अकस्मात् सिंहवाहिनीक दर्शन अनिवार्य किएक भऽ गेलनि? कोन ठेकान, जमीनक कागत लेने ओ भातिज कतहु पहिनेसँ ओतय बैसल हो कि नहि!

हे भगवान! ई कोन आफदि आबि गेल। सुधंग ई आदमी, ओ नहि जानि कोन चालि चलि रहल अछि। चकमा दऽ कऽ सभ जमीन ने कहीं लिखबा लिअय। बेचारी माय-बेटी! कतेक बात, कतेक विचार। सोचि-सोचि कऽ जखन बौखि गेलीह, तखने ओ दियर-भाउज हँसैत बतिआइत घुरलाह।

अन्नो सोझाँ नहि भेलीह, कात लागि गेलीह। मुदा शशितारकेँ अन्नो सन जीव की धोखा देतनि? ओकरा हटैत देखि अपना ढंगसँ बजौलथिन- "कि यै दाइ, पितिआइनकेँ देखि नुका किएक गेलहुँ? अहाँक तँ नामो नहि बूझल अछि हमरा। एक लोटा पानि तँ दिअऽ, पैर-हाथ धो ली। एक घड़ीक पाहुन तँ छी नहि जे अहाँ नुकायल फिरब। रहबाक विचारसँ अयलहुँ अछि। सोझाँ भेने बिना काज कोना चलत?"

झख मारैत अन्नपूर्णा एक लोटा पानि अनलक आ लोटा नीचाँ राखि जेना-तेना प्रणामो कयलक। ओकरा 'राजाक माय बनू'क आशीर्वाद देलनि आ पैर धोइत दियरकेँ कहलथिन- "अहाँ जे कहू बउआजी, अहाँक कनियाँकेँ भाग्य नहि केर बराबर अछि। ने अपने किछु जनैत छथि आ ने बेटीकेँ सिखौलनि अछि। बेटीकेँ एतबो ढंग नहि सिखौलनि कनियाँ जे कहय जे आउ काकी, अहाँक पैर धो दी। ई हम अपन सेवा करेबाक हेतु नहि कहि रहल छी, बेटी। अहाँक नीक लेल कहि रहल छी। अच्छा! तँ बेटी, अहाँक नाम की अछि?"

अन्नो आस्तेसँ कहलकनि- "अन्नपूर्णा।"

"आह! एहन राजेश्वरी सन सुन्दर रूप, एहन सुन्दर नाम, मुदा तकदीर देखू! भगवानक की लीला! बेटी तँ बउआजी एकदम अहाँपर गेल अछि। बेटा ककरा सन अछि? माय सन कि अहाँ सन?"

रमेश कहलथिन- "फैंट-फाँट सन।"

आब शशितारा नस पकड़ि लैत छथिन। कहैत छथिन- "देखू बेटी अन्नो, हम काकी छी अहाँक, तेँ अहाँकेँ एकटा सीखक बात कहैत छी। कहबाक हको अछि हमरा। अहाँ अधलाह नहि मानब। अहाँक ई वयस, एहन रूप आ फूटल भाग्य, अहाँक एतेक ढहनायब ठीक नहि।"

शशितारा बेटीक रहस्य पहिने बुझि गेलीह अछि। ओ जानि गेलीह अछि जे जखन ओ ओकरा दऽ ओकर मायसँ पुछने छलीह, तखन ओ अपन वैधव्यक दुर्भाग्यकेँ नुकयबाक हेतु घरमे नुकायल बैसल नहि छली अपितु ओ ताशक चौखरीमे ताश खेलाय गेल छली।

शशिताराक एहि कठोर वाणी सुनि अन्नोकेँ तँ अंगोर बनि छिटकि जयबाक चाहै छलै। ओ तँ मोनहि मोन सोचि लेने छल जे हिनकर कनिको मोजर नहि करत। शुरूएसँ हिनक विरोध करत। किछुओ सुनबय अओती तँ एकक दू सुन ती।

मुदा ई की? की भेलै ओकर विरोध करबाक संकल्पक? ओकर एकक दू सुनयबाक इच्छाक? ओ एकदम बौक भऽ गेलि आ आँखि किएक झुकि गेलैक?

ई अछि शशिताराक व्यक्तित्वक प्रभाव।

बेटीकेँ चुप भऽ जाइत देखि मास्टर साहेबक हिम्मति बढ़लनि। बजला- "अहीँ कहू भौजी! यैह बात तँ हमहूँ कहैत छियैक। अच्छा, आब अहाँ आबि गेलहुँ तँ हमरा कोनो चिन्ता नहि। आबसँ अहीँ देखब-सुनब, सम्हारब, जे उचित बूझी से करब। हम आब चैनसँ रहब।"

हुनक बात करबाक ढंगसँ लागल जेना एकटा थाकल-हारल मलाह अपन हाथक करुआरि दोसराक हाथमे पकड़ा चैनक साँस लेने हो।

शशिताराक मुस्की बड़ सुन्नर छनि। जखन हँसैत छथि तँ लगैए जेना पानि बरसि रहल हो। फूलपुरक लोक कहैत अछि जे हुनक हँसी सुनि कऽ के कहत जे हुनक वयस एतेक भऽ गेल छनि। ओ जखन हँसैत छथि तँ लगैए जेना कोनो बालिका हँसि रहल होथि। अपन वैह मोहिनी हँसी हँसैत बजली- "की बढ़ियाँ व्यवस्था कैलहुँ अछि बउआजी! अहाँक बातसँ तँ लगैए जेना हम एतय जड़ि बान्हि लेब। जखन फूलपुरसँ विदा भेल रही, ओतुक्का लोक बेर-बेर कहैत छल, जल्दी आयब, देरी नहि करब। हम कहिया धरि रहि सकब एतय?"

रमेश मास्टर गद-गद होइत बजलाह- "जखन आबि गेलहुँ अछि, तखन आब अहाँकेँ नहि जाय देब। ओ सभ अहाँकेँ बहुत दिन लेल पौलनि-अपनौलनि। हमरो तँ किछु भेटबाक अवसर भेटय।"

जेना शशितारा स्वयं कोनो सम्पत्ति होथि।

स्वामीक बात सुनि राजबालाक पारा चढ़ि जाइत छनि, मुदा नहि जानि किएक किछु बाजि नहि पाबै छथि ओ। ओ मात्र एतबे करैत छथि जे शशिताराक कान बचा बेटीक आगू कुहरैत कहैत छथि- "देखैत छैं

अपन बापक हाल? केहन कंगाल सन व्यवहार करैत छौ? ओकरा देखि कऽ लगैत अछि जेना ओ कोनो खजाना पाबि गेल हो। नहि जानि, ई स्त्री केहन जादू जनैत अछि। ठकुरबाड़ीमे जे एतेक समय लगौलक से हमरा लगैए, ओतहि बापकेँ किछु कऽ देलकौ।"

सच पूछल जाय तँ राजबालाक सन्देह बेजाय नहि। जखनसँ शशितारा आयल छथि, रमेश मास्टर हुनक एकदम वशमे भऽ गेल छथिन। आब हुनक ओ रुक्ख-सुक्ख मोन नहि रहलनि। साँझ कऽ स्कूलसँ आबि जे रमेश मास्टर छतक कड़ी निहारैत पड़ल रहैत छलाह, से आइ-काल्हि हँसी-मजाक, गप्प-सप्पमे समय बितबैत छथि आ एहूसँ दमगर गप्प ई अछि जे एहि दरबारमे आब नित्य दू-चारि लोक आबय-जाय लागल अछि। हुनका सभहक कहब छनि जे बन्दोपाध्यायक पैघ पुतोहु लाखमे एक छथि। मुदा हुनका सभक पत्नी एहि कथनकेँ स्वीकार नहि करैत छथिन। ओ सभ तँ राजबालाक मतक पोषण करैत छथि। हुनका सभहक कहब छनि जे ई स्त्री एतय आबि कऽ जमि गेल अछि आ रमेश मास्टरकेँ अपन आँचरक गिट्ठहमे बान्हि लेलक अछि। बुढ़ा अवश्य गेल अछि, मुदा एखनो मोहबाक शक्ति छै ओकरामे। ई शक्ति जँ नहि रहितै तँ अधेड़ व्यक्ति एहन वशीभूत कोना होइत? पकड़ि सकैत छलीह ओहि व्यक्तिक नाथ?

नहि बुझना जाइछ जे ओ की चाहैत छथि?

ओ की करय चाहैत छथि से वैह जानथि।

हिस्सा-बँटबाराक कोनो चर्चा नहि करैत छथि।

बस, एक काज करैत छथि ओ, टोला-मोहल्लाक, गाम-घरक हाल पूछब, टोह लेब आ किसान-मजदूरक दु:ख सविस्तर सुनब। बेचारी राजबालाकेँ तँ अपन पतिसँ एकान्तमे गप्प करबाक एतबो समय नहि भेटैत छनि जे दूटा जरलो-कटल सुनाबथि, बात कहथि। भोर होइतहि

'बड़की कनियाँ' आ 'भौजी'क अलाप शुरू करैत छथि तँ रमेश मास्टर दिन भरि रुकैत नहि छथि।

"भौजी, आइ भोजनमे की बनबैत छी?"

"आइ लक्ष्मीकान्तक मन्दिर जयबाक अछि तँ चलू बड़की कनियाँ, हम आइ स्कूलसँ जल्दी चलि आयब। हे भौजी, एहि नातिपर ध्यान राखल करू। देखबे तँ करैत छी जे पढ़बामे एकरा सभकेँ एको रत्ती मोन नहि लगैत छैक।"

बड़की कनियाँ उतारा दैत छथि- "की पकायब? अहाँकेँ की खयबाक मोन अछि, सैह कहू। वैष्णव भोजन अहाँकेँ एतेक नीक लगैए? हमर हाथक चीज नीक लागि रहल अछि, से हमर सौभाग्य अछि। अहाँकेँ भोजन करा कऽ हमरा ई सन्तोष भेटैए जे ससुरक कुलक ककरो दू दिन पका कऽ तँ खुआ रहल छी।"

कहियो कहथि- "आइ मन्दिर नहि जायब। पूर्णिमा दिन व्रत राखि कऽ भोरे चलब। ओहि दिन अहाँकेँ छुट्टीयो अछि।"

कहियो कहथि- "नातिपर कतहु कड़ाइ कैल जाय? आइ ओकरा संग कड़ाइ करब, काल्हि वैह डण्टा लऽ कऽ दौड़ायत नहि? जुनि चिन्ता करू, ओहो सुधरि जायत। मास्टर नानाक नाति अछि। ओ की मूर्ख होयत? मोनक बड़ साफ अछि दुनू।"

केहन नीक-नीक बात सभ।

राजबाला सुनैत रहैत छथि, भीतरे-भीतर पजरैत रहैत छथि।

रमेश मास्टरकेँ पकड़बाक एकमात्र अवसर भेटैछ तखन, जखन बड़की कनियाँ पूजा करय बैसैत छथि। मुदा तखन तँ रमेश मास्टरकेँ कनेको पलखति नहि रहैत छनि। ताहि समय ओ नहयबा-खयबा, स्कूल लेल तैयार होयबामे लागल रहैत छथि आ जखन ओ भोजन करबा लेल बैसैत छथि तँ बड़की कनियाँ धमकि जाइत छथिन आ ओहि समय प्रेमक

एहन बसंत अबैछ जे देखिते बनैछ। "आओर खाउ। ई की खयलहुँ! ई कोन भोजन भेल? एहिसँ तँ खयबा लेल नहिञे बैसितहुँ, सैह नीक। एतबा खयलासँ कहीँ शरीर बनय?" एहने बात सभ तखन सुनना जाइछ।

देखैत-देखैत उबि गेली तँ आइ राजबालाकेँ नहि रहल गेलनि। आइ शशिताराक पूजाक समय ओ पतिक लग जा कऽ कहलथिन- "की यौ, ई की भेल अछि अहाँकेँ? ई अहाँपर कोनो टोना कऽ देलक अछि की?"

राजबालाक ईर्ष्यासँ कारी पड़ल मुँहपर घृणा भरल दृष्टिसँ देखैत रमेश मास्टर कहलथिन- "हँ, कैने छथि। आब तँ प्रसन्न छी?"

"देखू, एहन सुद्धा नहि बनू। ई सभ ढोंग कतहु आओर करब। हमरा साफ-साफ कहू। राति-दिन अहाँ दुनूक बीच एतेक बात, एतेक की कनफुसकी होइत रहैए। हमरा देखिते चुप भऽ जायब, एहि सभहक की अर्थ अछि?"

नोसिदानीसँ एक चुटकी नोसि निकालैत रमेश मास्टर शान्त स्वरमे उत्तर देलथिन- "एकर अर्थ ई जे अहाँक कानमे कोनो बात देलासँ ओ बात सौंसे गाममे पसरि जायत।"

"यैह तँ हम जानय चाहैत छी जे ओ कोन काज अछि जे लोककेँ बिना कहने अहाँ करय चललहुँ अछि?"

"जखन काज बनि जायत तँ अहूँ बुझबे करब।"

"ठीक छै। हमहूँ लोककेँ घर-घर जा कऽ कहबै जे अहाँक भौजाइ टोना कऽ कऽ अहाँसँ सभ जमीन-जायदाद अपना नामे करबा लेलनि अछि।"

"जाउ, एखनेसँ जा कऽ परचारब शुरू करू।" ई कहैत सभ दिनक डरपोक रमेश मास्टर अकड़ैत भनसा घरक सोझाँ अबैत कहलथिन- "भोजन परसब की लड़िते रहब?"

आश्चर्य अछि, की भऽ गेलनि अछि रमेश मास्टरकेँ? हुनक बैसबाक ढंगो बदलि गेलनि अछि। बेटीक विधवा भेलाक बाद तँ हुनक रहलो-सहलो साहस स्वाहा भऽ गेल छलनि। बहुत लाचारी नहि हो तँ ओ ककरोसँ बजितो नहि छलाह। बजितो छलाह तँ लगैत छल जेना थकानसँ टूटि रहल होथि। आ आब? सदिखन जोश, प्रतिक्षण फुदकैत रहब!

जी जरैत रहैत अछि देखि कऽ। राति-दिन राय-विचार। गुप-चुप, गुप-चुप! बजैत एतेक धीरे छथि जे लाख प्रयासक बादो एक शब्द नहि बुझना जाइछ। फेर संगे-संग एम्हर-ओम्हर जायब तँ प्रत्येक दिन होइते छनि। देवी-देवताक तँ बहाना अछि, असल तँ अछि गप्प-सप्प। हुनक रंग-ढंग देखि कऽ तँ लगैछ जेना नव वयसक दियर-भाउज छथि। नव वयस रहितनि तँ एकर आने-माने निकालल जा सकैत छल। मुदा आब? एहि वयसमे? ई की? की नाम अछि एकर?

तेँ राजबालाक आशंका बिना जड़िक, बिना हाथ-पैरक नहि अछि।

सम्पूर्ण वयस काटि, जीवनक अन्तिम चरणपर पहुँचल, मृत्युक कछेरपर ठाढ़ ई दुनू वृद्ध-वृद्धा विचित्र नेनपनमे आकंठ डूबि गेल छथि। जे जमाना बीति गेल अछि, ओहिमे ई दुनू एकवयसू, पैघक आँखि बचा, छतक एक कोनमे ईंटाक घर बना, पातक पूरी सेकि-खा कऽ जे आनन्द प्राप्त करितथि, हुनका दुनूकेँ देखि एहन लगैछ, जेना सैह आनन्द एखन हुनका दुनूकेँ आब भेटि रहल छनि। लगैत अछि जेना ओ सभ पैघक नजरि बचा कतहु अपन घर बनौने होथि। तेँ एतेक बात, एतेक सतर्कता। बहु-बेटीक आगू बात बदलब, नुकायब।

एम्हरसँ, ओम्हरसँ बहुत प्रयास कैलाक बाद एक दिन अन्नो अपन बापकेँ कहैत सुनिए लेलक- “नगद तँ देत, मुदा एतेक रुपैया लऽ कऽ

अहाँ एकसर जायब?" मुदा जहिना अन्नो कोठलीमे पैर रखलक, ओकर पिता कहि उठलथिन- "तँ बड़की कनियाँ, यैह निश्चित रहल, अगिला अमावस्याकेँ अहाँ सिंहवाहिनीक भोग लगायब। कोन भोग लगबय चाहैत छी? मैदाक अथवा खिच्चड़िक?"

शशितारा डँटैत कहलथिन- "बूढ़ भऽ गेलहुँ बउआ, अकिल नहि आयल। ई नाओं लेल जाइत छैक? कहल जाइत अछि दालि-चाउरक मिलल भोग।"

अन्नोक गेलापर शशितारा फेर कहलथिन- "देखू, ध्यान राखब, ओहि समय चील-कौआकेँ सेहो नहि पता चलय, तोड़यवलाक सेहो कमी नहि। पहिने काज बनि जाय दिअऽ, फेर ढोल पीटैत रहब। पीटय तँ पड़बे करत। छत पिटायब ढोल पिटबासँ कोनो कम तँ नहि।"

बात खास नहि। दसेक बीघा जमीन बेचब। बस, एतबे। रेलवे स्टेशनक बगलमे जे भूमि अछि, एखन धरि बहुतोकेँ नहि बूझल छैक जे ओ रमेश मास्टरक पुश्तैनी जमीन अछि मुदा शशितारा अबिते पता लगा लेलनि अछि। पता लगेबाक संगहि ओकरा बेचबाक जिद्द पकड़ि लेलनि अछि आ शशिताराक पकड़ तँ काँकोड़क पकड़ अछि। प्राण भने चलि जाय मुदा पकड़ नहि छूटत। शशितारा जखन जिद्द पकड़ैत छथि तँ पूरा कैने बिना नहि मानैत छथि।

"चौबीस बीघा जमीनक मालिक छी अहाँ आ अहाँक ई दुर्गति? एहि दरिद्रताक अन्त करहि पड़त। लक्ष्मीकेँ भूमिगत बना कऽ रखबामे समृद्धि नहि अछि। हुनका बाहर आनय पड़ैछ। बाहरमे लऽ जा कऽ हुनका दाओ-पेंच करबाक अवसर देलेपर समृद्धि अबैत छैक।"

रमेश मास्टरक निर्जीव छातीमे एतेक बल नहि जे एहन कठिन काजमे हाथ लगाबथि। मृत्युकाल ओ एहि चौबीस बीघाकेँ छातीसँ सटौनहि मरितथि। ई हुनका मस्तिष्कमे कहियो नहि जगलनि जे एहिमे सँ

किछु बेचि देलासँ हुनक दैन्य-दशा समाप्त भऽ सकैत छनि।

राजबाला?

अरे ओ! ओकरा तँ बुद्धि नामक वस्तुए नहि छैक। पतिकेँ नीक विचार दिअय, साहस दिअय, दस-बीस लोकक बीच माथ उठा कऽ ठाढ़ होयबाक योग्यता अर्जित करबाक शक्ति दिअय, तेहन महिला ओ अछिए नहि। ओकरा तँ सभ बातमे सन्देह, सभ डेगपर शंका। किछु करबाक हेतु डेग बढ़बितथि रमेश तँ राजबाला पहिनहि हल्ला करितथिन- "आब बुड़ब, आब अहाँ निश्चित बूड़ि जायब।"

शशिताराक प्रबल व्यक्तित्व मास्टर साहेबकेँ साहस दैत छनि। ओ चुपचाप खरीददार तय कैलनि। दाम सेहो पक्का भऽ गेल। शशितारा कहलथिन- "ई किएक ने सोचैत छी, सम्पत्तिमे जे हमर हिस्सा अछि, तकरे बेचल जा रहल अछि। परस्पर गप्प-सप्पक बाद एहन कैले जा सकैछ। कचहरी जयबाक कोनो आवश्यकता नहि। फूलपुरमे जतेक बेर हिस्सा-बँटवारा हमरा सोझाँ भेल अछि, से हमहीँ करौलहुँ अछि। हम कचहरी धरि बात जाइए नहि दैत छलहुँ। हम अहाँकेँ लीखि-पढ़ि कऽ दऽ देब जे आब एहिपर हमर कोनो दावा नहि रहल आ एहि दस बीघा जमीनक बदला जे दस हजार रुपैया भेटत, ताहिसँ हमर ससुरक ड्योढ़ीक मरम्मति कराओल जायत आ इहो सुनि लिअऽ, एतेक दिनक बाद जे एतय अयलहुँ अछि, से एही लेल।"

रमेश मास्टर कहलथिन- "मुदा कनियाँ, अहाँ अपन हिस्साक सभ पाइ मकान मरम्मतिमे लगा देब, तँ की अहाँ एतय रहि सकब?"

हँसि कऽ शशितारा कहलथिन- "के कहि सकैत अछि? मनुक्खक मोनक बातक कोन पता? जँ हम एतय रहय चाही, तँ की अहाँ नहि रहय देब?"

"की कहै छी भौजी, अहाँ अयलहुँ अछि तँ लगैए जेना केओ

हमरापर छत्र लगौलक अछि। रौद-पानिसँ हमर रक्षा भऽ रहल अछि। अहाँकेँ अयलासँ तँ हम पहाड़क छाँह पाबि गेलहुँ अछि।"

"मुदा अहाँक घरवाली तँ जरल जा रहल छथि।"

"ओकरा मारू गोली। ओकर स्वभाव एहने छै। माय लग किछु काल बैसैत छलहुँ, किछु बेसी गप्प करैत छलहुँ, तइयो ओ ओहिना जरि मरैत छल। कहैत छल मायक बौए बनि कऽ काटि लेब जिनगी? गृहस्थीमे किछु अहाँकेँ करबाक नहि अछि आ गृहस्थीक बातक माने अछि बेटाक आचरणक कुचेष्टा आ पुतोहुकेँ गारि देब। ओकर पुरखाकेँ उकटब। ई सभ हमरा नीक नहि लगैए। आब यैह जे अहाँसँ गप्प करैत छी, दुनियाँ भरिक बेकार बात, एहिसँ हमर हृदय शीतल होइत अछि मुदा दुनि याँ की चाहैए जे ककरो चैन भेटैक? शन्तिसँ केओ रहय? नहि। ओकर तँ यैह प्रयास रहैत छैक जे कतय कोन भाला चलाबी, ककरा कतय तंग करी।"

से तँ जे अछि से अछि मुदा एखन नारियरक गरी सन सुखायल शशितारा आ अर्द्धपागल रमेश मास्टर एकहि धरतीपर विचरि रहल छथि, अपनहि स्वप्नक धरतीपर।

शशितारा कहैत छथि- "देखू बउआ, मकानक मरम्मति अवश्य करबाउ मुदा एकर जे बनावटि अछि, एहिमे कोनो फेर-बदल नहि होबय दिअऽ। बनबयवला जे योजना बनौने रहथि, सैह रहऽ दियौ। ईंटापर सँ बालू-सीमेन्ट उखड़बा कऽ नव ढंगसँ प्लास्टर करबाउ। खिड़की-केबाड़केँ अवश्य बदलबा दियौ किएक तँ एकर लकड़ी सभ एकदम खराब भऽ गेल छैक। मुदा ई कहू, मकानक रंग कोन रहत?"

"हम की जानय गेलहुँ? जे पसिन हो, से करबा लिअऽ।"

"नहि, से ठीक नहि, छोटकी कनियाँ आ अन्नोसँ पूछि लिअऽ।"

"ओकरा सभसँ की पूछब?"

"नहि, एना नहि बाजी। फूलपुरमे सेहो हम अपन भातिज सभकेँ

कहैत छलियनि जे कोनो काजमे ‘हँ’ कहबासँ पहिने एक बेर घरवालीसँ गप्प कऽ लेल करह। एहन नहि हो जे बादमे ओकरा कहबाक अवसर भेटइ जे हमरासँ तँ पुछबो नहि कयलहुँ।”

शशिताराक भातिजक विषयमे सुनब सेहो नीक लगैत छनि रमेश मास्टरकेँ। आइ धरि मायक अतिरिक्त कोनो दोसर स्त्री रमेशसँ एतेक गप्प, एहि तरहक गप्प नहि कयने छल। मायक आ हिनक खिस्सामे अन्तर अछि। माय जाहि दुनियाँक गप्प करैत छलथिन तकर ओ स्वयं निवासी छलाह, ओहिसँ परिचित छलाह। हुनक पूर्ण जानल-चिन्हल बेकार दुनियाँ। शशितारा रमेशक आगू एकटा दोसरे दुनियाँक नक्शा खोलि देलनि अछि। मोन लगा कऽ सुनैत छथि रमेश आ बुद्धि लगा कऽ बुझैत छथि। ओतय ओहि अर्थवान प्रतिष्ठित परिवारमे शशितारा कतेक मानल जाइत छथि। मात्र भतीजाक घरेपर नहि, पूरा फूलपुरपर शशिताराक कतेक प्रभाव छनि, एहि बातकेँ खूब बुझैत छथि, रमेश मास्टर।

हुनका सनक देवी, आइ हिनकर घरपर एना पड़ल छथि! एहिपर रमेश मास्टर कृत्य-कृत्य नहि होथि?

की ओ ओहिना पड़ल छथि? रमेशक कल्याणक लेल पड़ल छथि। रमेशक एहन हितैषी की केओ आओर कतहु अछि?

जमीन बेचल जा रहल अछि, ई रहस्य नुकायल नहि रहल। जतेक चुपचाप गप्प होयबाक छल, ओतेक नहि भेल। बात फुजिए गेल।

राजबाला बूझि जाइत छथि जे बाढ़िक पानि गर्दनि धरि आबि गेल अछि। राजबाला बूझि जाइत छथि जे आगि छतक फूसपर लहकि रहल अछि। सत्यानाश होयबामे आब देरी नहि। राजबालाकेँ रहल नहि जाइत छनि। अन्नोसँ बेटाकेँ चिट्ठी लिखबैत छथि। ओहो आबि जाइत छनि। हँ, बड़का बेटा आबि जाइत छनि। बात एहन-ओहन तँ नहि!

जखन बड़का बेटा घर अयलनि, ओहि समय ने तँ घरपर रमेश छलाह आ ने शशितारा। दुनू कृष्णनगर गेल छलाह। वीरनगर , बाद कुल्लाक लोककेँ अदालती राज-काज लेल कृष्णनगर जाय पड़ैत छनि।

माय-बहिनसँ सभ बात सुनि बड़का बेटा जीवेश सन्न रहि जाइत अछि। कहैत छनि- "अहाँ जनैत छी जे ई सभ जादू-टोनाक कारण भेल अछि?"

"से नहि तँ की? बिना जादू-टोनाक एहि तरहक घटना सम्भव अछि? जे जमीन तोहर पिताक बापक जमानासँ ओहिना पड़ल छल, आइ धरि ओहिपर ककरो आँगुरो रखबाक ध्यान नहि आयल छल, से जमीन ओ अबितहि बेचि देलनि। हम तँ सभ दिनसँ यैह सुनैत अयलहुँ अछि जे ओ जमीन गोचर हेतु ओहिना छोड़ि देल गेल छलै। ओकरा तँ पुण्य-कर्मक जमीन मानि कऽ छोड़ल गेल छलैक। पुरान लोक सभ एहि तरहक काज धर्मक लेल करैत छलाह। ओ सभ पोखरि खुनबैत छलाह, गायक चरबाक हेतु जमीन छोड़ैत छलाह। आब तोँही कहऽ जे बाप-दादाक स्वर्गवासक टिकटकेँ बेटा भऽ कऽ तोहर बाप फाड़ि कऽ फेकबामे लागल छथि!"

जीवेशक मोन मायक तर्क स्वीकार नहि करैछ।

ओकरा विचारसँ जमीन बिका रहल अछि, से बात खराब नहि। बाबू जे ई काज करब स्वीकार कैलनि अछि, ताहिसँ ओकरा प्रसन्नता छैक।

ओकरा ई नहि सहल होइत छैक जे जमीन बेचि कऽ जे रुपैया भेटय, तकर हकदार केओ आन भऽ जाय। ओ कहलकनि- "ठीक छै, आबऽ दहुन घुरि कऽ। देखैत छी, एकटा अनपढ़-गमार बुढियासँ एतेक डर?"

बेचारा जीवेश!

बिना जनने-बुझने लोक कतेक बात कहैत अछि- कतेक निश्चय करैत अछि।

जीवेश हथियार लेने बैसल रहल। मुदा भेलै की?

भेलै ई जे रेलगाड़ीसँ उतरि रिक्शासँ घर अबैत काल हुनका दूनूकेँ जीवेशक अयबाक समाचार भेटि गेलनि। रिक्शेवला कहलकनि- "तीन बजेक गाड़ीसँ बड़का भैया कलकत्तासँ अयलाह अछि।"

शशितारा घरमे पैर रखितहि चिकरलनि- "कतय छह, नवाबक जमाय, कनेक तोहर मुँह देखू। हमरा अयला एतेक दिन भऽ गेल, बेटाकेँ देखबा लेल आँखि सिहा गेल। शनि तँ सभ सप्ताह अबैत अछि। घर मोन पाड़ि कऽ किएक नहि अबैत छह?"

रमेश मास्टर आइ-काल्हि शक्तिशाली भऽ गेलाह अछि। कहलथिन- "घरकेँ घर बूझय तखन ने आबय।"

सदिखन शशितारा न्यायक पक्ष लैत छथि। एहि बातपर कहलथिन- "ओकरो की दोष दी? घरक हाल अहाँ केहन बना कऽ रखने छी। ने सुविधा अछि पानिक, ने बिजलीक। ओ घर कोना आओत? कलकत्तामे कतेक आराम छैक। आगू देखब, अबैत अछि कि नहि? देखबै, एकर बाद एही घरमे ओकरा कतेक मोन लगैत छैक।"

ककर बाद? ई जीवेशकेँ नहि बूझल छैक। बेचारा जीवेश जे कहबाक हेतु सोचने छल, तकर पता नहि की भेलै। गरिमासँ परिपूर्ण एहि स्त्रीकेँ देखितहि खौलैत वीर-दर्प आ मुँहजोड़ उतारा जेना कपूर सदृश विलीन भऽ गेलै।

आइ शशितारा कचहरी गेल छलीह। तेँ आइ ओ साफ, इस्त्री कैल रेशमी नूआ पहिरने छथि। हुनक कटगर चेहरापर एहन दर्प, एहन अभिमान झलकि रहल छनि जे हुनका आगाँ सभ बौन भऽ जाइत अछि।

एहन व्यक्तिक मुँहपर किछु कहबाक हिम्मति नहि होइत छैक। जे

कैल जा सकैत छल, सैह कैलथिन ओ। हुनका पैरपर झुकि गेल आ प्रणाम करैत मेमिया उठल- "समये नहि भेटैछ।"

शशितारा कहलथिन- "बात ठीक छै। मोट दरमाहाक सरकारी नोकरी करैत छह। बहु छह, बच्चा छह। तोरा पलखति कोना भेटतह! मुदा बेटा, एकटा बात बिना कहने हमरा नहि रहल जाइछ जे तोहर पैघ होयबाक, मान-प्रतिष्ठा पयबाक मोले की जँ अपन गाम-घरमे, अपन परिचय, अपन प्रतिष्ठा नहि राखि पौलहुँ? कलकत्तामे तोँ भलेँ राजा सनक ठाठ भरल जिनगी बिता रहल होअऽ मुदा ओ तोहर पट्टीदार अथवा समाजक लोक तँ नहि देखैत छथि आ शहरमे राजासँ टक्कर लेबा लेल महाराजा केर कमी नहि। तोरा सन राजा कलकत्ताक सड़कपर सैकड़ाक संख्यामे घूमैत रहैत अछि। मुदा तोँही शहरसँ गाम आबि जाह तँ देखह कतेक मान-प्रतिष्ठा तोरा भेटैत छह। एकटा आओर बात अछि, तोहर पुरखाक बनायल ई मकान आइ केहन झुरझुरा गेल अछि । कहिया, कखन तोहर बापेक माथपर भरभरा कऽ खसि पड़तह से केओ नहि कहि सकैछ। की एहि लेल तोरा किछु नहि करबाक चाही?"

एक साँसमे एतेक लम्बा-चौड़ा प्रवचन झाड़ि शशितारा चिकरलथिन- "कतय गेल ओ? बर्त्तन ला। मधुर सभ उठा कऽ राख। भैयाकेँ दे, बच्चा सभकेँ दे। कृष्णनगरक मलाइक गिलौरी अछि। आब तँ बस नामे रहि गेल छैक। ने ओ सुगन्ध आ ने स्वाद। से की करबैं, नामे खाइ जो।"

दियर-भाउजकेँ एक रिक्शापर बैसल देखि राजबालाकेँ देहमे आगि लागि गेल छलनि। जखन ओ ई देखलनि जे हुनकर बेटा सेहो हुनका आगू मिमिआय लागल तखन तँ जेना आगिपर पेट्रोले पड़ि गेल। सोचय लगली राजबाला। एखने तँ बड़ा कूदि रहल छल- "ई कहबै ओ कहबै। बाबूजी आदर करथुन, माथ झुकबथुन, हम एकक दू कहबै। साफ कहबै- "कोन अधिकारपर अहाँ जमीन बेचलहुँ? पहिने मोकदमा कऽ कऽ अपन

हिस्सा बँटबा लिअऽ, तरखन बेचब जमीन। बाबूजी सोझ लोक छथि, हुनका पट्टी पढ़ा सकैत छी, मुदा हम हुनका सन नहि छी।"

मुदा जखन अवसर आयल तँ बकलेल मुहोँ नहि खोललक। भलमानुस जकाँ मधुर खाय बैसि गेल। बाप रे बाप, की जनानी अछि। जकरे दिस नजरि उठबैत अछि, ओकरे सत्यानाश कऽ दैछ..!

राजबालाकेँ नहि रहल गेलनि। अपना कोठलीसँ निकलली। एतय आबि कहलथिन- "की जीवेश, तोँ किछु बाजयबला छलैं, से नहि बजलैं?"

मायकेँ रोकबा लेल सकपकायल जीवेश बाजल- "जल्दी की अछि माय? कहबनि करवनो। आइए तँ हम जाइत नहि छी।"

"कोना नहि अछि जल्दी? आइ नहि तँ काल्हि भिनसरे तोँ चलि देबैं। की हेतै ओहि काजक जाहि लेल तोँ काज-धाज छोड़ि भगैत एतय अयलैं?"

जीवेशकेँ लगलै जे सहीमे ओ अपन कर्त्तव्यक पालन नहि कऽ रहल अछि। ओ जेना चूकि रहल अछि। ओकरा किछु करबाक चाही। एहि विचारसँ ओ पिता दिस मुँह कऽ कऽ बाजल- "कहबाक लेल जखन आयल छी, तँ हमरा कहय पड़त बाबूजी? बात ई छै जे सुनलहुँ जे रेलवी टीसन लग जे हमर सभहक जमीन अछि से बेचल जा रहल अछि।"

"बेचल जा रहल अछि कि ओ बिका गेल। वैह काज पूरा कऽ कऽ तँ आबि रहल छी।" शशितारा सहज भावसँ जवाब देलथिन।

"ओ, तरखन तँ बाबूजीसँ कहय चाहब जे बेचयसँ पहिने हमरासँ एक बेर पूछब आवश्यक नहि बुझयलनि?"

बेचारा रमेश मास्टर सकपका कऽ एक बेर बेटा दिस तकलनि आ एक बेर शशितारा दिस।

हुनक दशा शशितारासँ नुकायल नहि रहलनि। आगू बढ़ि करुआरि

सम्हारलनि- “पुछबा योग्य होइतह तँ अवश्य पूछल जइतह मुदा जखन एहन नहि छह तँ ई उलहन तोहर मुँहसँ शोभा नहि दैछ। जाहि बेटाकेँ सालमे एक दिन आबि माय-बापक हाल पुछबाक पलखति नहि, जमीन-जायदादक मामलामे सुझाओ देबाक हेतु ओकरा पलखति भेटतै कि नहि, से बेचारा बाप कोना जानत? आओर जे जमीन बेचल गेल अछि, से हमर हिस्साक थिक। ई तँ तोँ जनिते होयबह जे हम एहि घरमे बिआहल गेल छी। पैघ पुतोहु छी एहि परिवारक। एहि जमीनपर हमरो हक अछि। चौबीस बीघा जमीनपर हमरो किछु हिस्सा भैए सकैए। की विचार छह? नहि भऽ सकैए? ओही जमीनकेँ हम अपना मोनक कयलहुँ अछि। जँ तोहर इच्छा छह, तोरामे योग्यता छह, तँ जा कचहरी, बाप आ पितिआइनिपर मोकदमा ठोकह।”

शशितारा सम्पूर्ण परिस्थितिपर हथौड़ी सन चोट जमा, सभ आलोचनापर परदा खसा, शेरनी जकाँ पोखरि दिस नहाय चलि देलनि।

राजबाला अपन कोठलीमे जा कऽ पड़ि रहैत छथि। जीवेश उठि कऽ अन्यत्र चलि जाइछ। चुपचाप दूटा मधुर उठा अन्नो अपन बच्चाकेँ ताकय चलि दैत अछि। ओसारापर रमेश एकसर बैसल रहि जाइत छथि। मुदा आश्चर्य! रमेशकेँ डर नहि लगैत छनि। पहिलुक दिन रहैत तँ बेटाकेँ देखितहि करेज धकसँ रहि जइतनि।

एहि घटनाक थोड़ेक दिनुक बाद शशिताराक ओकील भातिज अजीत चट्टोपाध्यायकेँ वीरनगरक बन्दोपाध्यायक घरपर देखल गेल।

खिड़कीसँ देखना जाइछ जे आँगनक एक कोनमे ‘ट्यूबेल’क काज भऽ रहल अछि। ट्यूबेल लगबयवला मिस्त्रीक स्वर एक तानसँ उठि-खसि रहल अछि। काज करयवला मिस्त्री दिस देखि भातिज महोदयक मुँह कारी पड़ि गेलनि। ओ कहलथिन- “यैह अहाँक मोनमे छल पीसी, तँ हमरा एतेक नचौलहुँ किएक?”

ओकर बातपर खास ध्यान देने बिना शशितारा कहलथिन- "देख अजीत, निरर्थक नहि बाजी। हम तोरा नचौने नहि छलियौ, तोँ स्वयं नाचल छलैं। तोँ तैयारी कयलैं तँ हमहूँ सोचलहुँ, देखी चलि कऽ की बात छैक! जखन हमर हक अछिए, तँ हमरा भगा तँ नहि सकैत छथि। ई जे जिनगी भरि सभ महीनामे दू-दू बेर एकादशीक व्रत रखैत छी, हाथ नांगट कऽ कऽ सौंसे दुनियाँक आँखिक पिपनी बनल फिरैत छी, से सभ ककरा लेल? एहि नरे-जड़क लेल ने? यैह सोचि एतय आयल रही। आबि कऽ देखलहुँ जे ससुरक ड्योढ़ी, टी.बी.क रोगी जकाँ खोंखैत दम तोड़बाक तैयारीमे अछि। आँखिसँ जखन देखि लेलहुँ तँ एहन हालतिमे छोड़ि कोना चलि जइतहुँ? तोंही कह, एहि समय एकर दवाइ-दारूक व्यवस्था करबाक अछि। एतबे बहुत नीक अछि जे एहि दवाइ-दारू लेल अपना गेँठसँ एक कौड़ी निकालबाक आवश्यकता नहि। एहि ठाम तँ गंगाजलसँ गंगापूजावला फकड़ा सत्य भऽ गेल। ससुरक जमीन बेचि हुनक मकानक मरम्मति भऽ रहल अछि।"

अजीतक पारा चढ़ि गेलनि। ओ कहलथिन- "एखने अबैत काल देखलहुँ, बालु-सिमेन्टक टाल लागल अछि, ट्यूबेल' लगबा रहल छी, से देखिए रहल छी, एकर अर्थ जे जमीन बेचि कऽ जे भेटल दस-बारह हजार, से एहि लोकक मकानक पाछू स्वाहा कऽ रहल छी।"

आब शशिताराक रूखि बदलल। ओ गम्भीर भऽ गेलीह। कहलथिन- "हिनकर मकान किएक कहैत छैं अजीत? की ई हमर ससुरक ड्योढ़ी नहि अछि? टूटल-फाटल मकान हिनकर आ हरियर जमीन हमर, यैह तोहर न्याय छौ?"

हुनक बात अजीतकेँ किएक नीक लगितनि? खटगर सन मुँह बना कऽ कहलथिन- "ठीक छै, भू-सम्पत्ति अहाँक अछि। जे मोन हो से करू। एकर फल अहीँकेँ भोगबाक अछि। हमरा की? मुदा ई पुछबाक मोन होइछ जे एहि मकानक एहन खस्ता हाल किएक होबय देलनि? नहि

छलनि पाइ, नहि सही, जमीन बेचि कऽ तँ मकान दुरुस्त कऽ सकैत छलाह?"

मुँह बिचकबैत शशितारा कहलथिन- "कोना करितथि? एखन धरि तँ मलिका विक्टोरियाक हुकूमत चलैत छलनि। जेना ओ चाहथि, से करथि। ई बेचारे एखन धरि आवाजो उठा सकलाह अछि कहियो? हुनका बुझाइत छलनि जे एतयसँ चलैत काल जमीन अपना संग लऽ जयती आ एहि अभागलक दशा तँ देखिए रहल छैं। दूटा बेटा अवश्य छनि मुदा एकसँ बढ़ि एक स्वार्थी। दूटा बच्चाकेँ संग लऽ बेटी गर्दनि पड़ि गेल छनि। अपन स्वास्थ्य से ठीक नहि। तैं जे किछु करबाक अछि से हमरे करबाक अछि।"

"तखन की? आब हम की कहि सकैत छी? भैया अहाँसँ कहय कहने छलाह जे परीक विवाहक बात आगू बढ़ि गेल अछि। अहाँक बिना गेने हम बात पक्का नहि कऽ पाबि रहल छी। तँ अहाँ जायब ने? की विचार अछि?"

शशितारा विचलित भेलीह। कहलथिन- "एना किए बजैत छैं अजीत? हम जयबासँ कहिया मना कैलहुँ अछि? मुदा हँ, एकटा पैघ काज एतय शुरू कयलहुँ अछि, ओकरा कने ढंगसँ कैने बिना नहि जा सकैत छी। रहल परीक विवाहक बात, तँ ओतय ओकरा माय-बाप, पित्ती-पितियानि सभ छैके, कऽ लिअय बात पक्का। पीसी की सभ दिन बैसले रहती? मरती नहि?"

अजीत चलि गेल।

राजबाला माथ पीटि-पीटि आस-पड़ोसमे अपना दुखड़ा सुनबैत रहली- "भातिज लेबय आयल छलनि, कतेको बेर कहलियनि मुदा ओ टससँ मस नहि भेलीह। दियरक सभ किछु चिबाइए कऽ जयती ई।"

जमीन बिकयबाक बात सभ जनलक आ रमेश मास्टरक मूर्खताकेँ

धिक्कारलक अछि। लोक सभ कहलक- "छि:, एहि वयसमे एकटा स्त्रीक मोहिनी जालमे फँसि गेलाह! नहि जानि कतयसँ आबि जमि गेल आ लागल महारानी जकाँ हुकुम चलाबय। की स्त्री अछि, रे बाप! बहु, बच्चा ककरो बातपर ध्यान नहि दैत छथि, बस ओकरे पैरपर शरण लेने पड़ल-पड़ल हुकुम बजा रहल छथि। बुद्धि मारल गेलनि अछि मास्टरक, छि: ।"

ओ सभ जे कहि रहल छथि से बात उड़ा देबाक जोगर नहि अछि। आइ-काल्हि वास्तवमे रमेश ककरो नहि सुनैत छथि। हुनक कानमे शशितारा निरंतर मंत्र फूकैत रहैत छथि- "ट्यूबेल लगबौलहुँ अछि, एकर मतलब ई नहि जे इनारकेँ भथले रहऽ देल जाय। ओकरो ठीक करबय पड़त आ फेर अवसर लगितहि नलक पानिक सेहो व्यवस्था करबा लेबय पड़त। सड़क धरि पानिक नल आबिए गेल अछि। आ फेर एही समय लगले हाथ बिजलीयो लगबा लिअऽ। बउआजी, पाइक चिन्ता करबाक कोन खगता? हम तँ छीहे। कने सोचू तँ, एहि मकानक जखन रंगाइ-पोताइ भऽ जायत आ रंगल मकानमे बिजलीक प्रकाश चमकय लागत, तखन केहन सुन्दर लागत? एक बेर सोचू। हम तँ एखनेसँ ओहि सौन्दर्यक आभा देखि रहल छी।"

शनै: शनै: रमेशो एहि स्वप्नकेँ देखय लगलाह। आब ओ कहैत छथि- "अहाँ हुकुम दैत रहू, हम बजबैत रहब। की कहू भौजी, अहाँक हिम्मति हमरामे एक सौ हाथीक तागति भरि देलक अछि। जाहि खिड़की, केवाड़ सभमे कीड़ा लागि गेल छल, ओकरा बदलबाबय लेल अहाँ कहने छलहुँ, से आइ नाप दऽ अयलहुँ। हम ओकरा कहि देलियैक अछि जे पुरान लकड़ीकेँ काटि-कूटि कऽ चिप्पी लगेबाक काज नहि, नवे बना दिअऽ।"

करवनो कहैत छथिन- "आइ सीमेन्टक व्यवस्था भऽ गेल, बड़की कनियाँ। आइ-काल्हि कालाबजारी अछि मुदा ओ कहलक अछि जे उचिते दामपर देत। सीमेन्टवला हमरे विद्यार्थी छल। बड़ नीक लोक

अछि।" फेर दुनू मीलि नव-नव कल्पना करैत छथि, नव-नव योजना बनबैत छथि।

आँगनक हाल बहुत बिगड़ि गेल छनि। ठाम-ठाम खद्धा भऽ गेल छनि। ओकरा सभकेँ कोड़िकऽ बराबर करयबाक छनि। तखन जमीन बनेबाक छनि। लाल सीमेन्टक जमीन बनत। हरियर रंगक किनारी आ ठीक बीचमे, जतऽ बिआह-दानक समय अरिपन बनाओल जाइत अछि, ततऽ खूब पैघ सन जमीनपर अरिपन जकाँ संखमरमरक डिजाइन बनाओल जायत। से जखन बनि जायत तँ आगू जहिया कोनो आवश्यकता होयत, अरिपनक लेल चिन्ता नहि करय पड़त। शशितारा कहैत छथिन- "नव-कनियाँ सभ आबि कऽ सोझे अरिपनपर ठाढ़ भऽ गेल करती।"

"भानस घरक देवालमे अलमीरा लगेबाक होयत, बुझलहुँ बउआजी, ओहिसँ फायदा ई होयत जे दिनमे चौदह बेर भानस लेल सामान नहि निकालय पड़त। बेर-बेर भण्डारो नहि खोलय पड़त। आठ-दस दिन जोगर सामान भनसे घरमे राखल रहत। पछिला बेर फूलपुरमे काज भऽ रहल छल, तखन हम एहने बनबा देने छलियनि। आब कनियाँ सभ भोर-साँझ हमरा धन्य-धन्य कहैत छथि।"

रमेश मुस्काइत चुटकी लेलनि- "एतय ई नहि होमऽवला अछि। हिनका सभकेँ लाख सुविधा भेटतनि मुदा तैयो अहाँक बड़ाइ नहि करतीह।"

"बुझल अछि।" शशितारा आँखिएसँ मुस्कुरा कऽ जवाब दैत छथिन।

"ओकरा तँ बुढ़ारीमे नेनपन सुझलै अछि।" बूझैत छथि, ठीके बुझैत छथि राजबाला, सदैवक अनमनायल राजबाला, घर-गृहस्थीक काजसँ भागयवाली राजबाला आइ अपन अहदी पतिकेँ कर्मठ आ तत्पर

देखि रहल छथि, तँ प्रसन्न होयबाक स्थानपर जरि कऽ भुस्सा भेल जाइत छथि। मुदा हुनका दुनूकेँ एहि बातक कोनो ध्यान नहि। हुनका दुनूक विचार छनि जे कुकुर तँ भुकिते अछि, तैँ की बटोही बाट चलब छोड़ि देत!

ओ कहैत छथि- "जखन देवालमे लागल बटन दबा कऽ अहाँक घरवाली बिजली जरैत देखती आ देवालक घेरल नहयबाक कोठलीमे नलक टोंटी घुमा कऽ पानि निकालि नहयती , तँ मनहि-मन हमरा, बुढ़ियाकेँ प्रणाम करती। अहाँ जल्दीसँ बिजली आ पानि लेल आवेदन दऽ दिऔक।"

मिस्त्री आ मजदूरसँ काज करयबाक सेहो एकटा पैघ निसाँ होइत छैक। ककरो-ककरो लेल तँ शराबोक निसाँसँ तेज। शशितारोकेँ एकर चसका बहुत पहिनहि लागि गेल छलनि। फूलपुरमे, मात्र चट्टोपाध्यायक घेरमे नहि, गाम भरिमे जखन ककरो घरमे मिस्त्री लगाओल जाइ छल, तँ शशितारा सोझाँ ठाढ़ि भऽ कऽ ओकरा सभसँ काज करबैत छली। ओ सभ निश्चिन्त भऽ जाइत छलीह- "चलू, पीसी आबि गेलीह अछि, आब चिन्ता नहि। आब ई मिस्त्री मिनटो भरिक समय बर्बाद नहि कऽ पाओत।"

समयक बर्बादी आ काजक उत्कर्षक बरबादी, ई दुनू शशितारोकेँ बर्दाश्त नहि। एहि पुरान आदतिक संग जुड़ि गेल छनि, एकटा नव आकर्षण। एहि बेर शशिताराक सभ काजमे 'हमर' शब्द जुड़ि गेलनि अछि। फूलपुरक चट्टोपाध्यायक घर एतेक साल रहली, एतेक काज कैलनि, करौलनि, एतेक ठाठसँ राज-पाट चलौलनि। ओतय सभ छल मुदा ई 'हमर' शब्द नहि छल। ने छल एकर मादकता आ ने एकर आकर्षण..!

तैं कहल गेल अछि जे बेटीकेँ दोसरा माटिसँ गढ़ैत छथि भगवान।

ओ जन्मजात दोसराक होइत अछि।

जँ नहि तँ फूलपुरक जे चट्टोपाध्याय सभ हुनका अपन घरक महारानी बना कऽ रखलथिन, स्वयं हुनक प्रजा, हुनक आज्ञाकारी सेवक बनल रहलाह, शशिताराक जीवनक बहत्तर साल जतय राजपाट सम्हारैत बीतल- "हमर अपन" शब्दक स्वाद हुनका ओतय कहियो नहि भेटलनि। भेटलनि एतय, वीरनगरक भवेश बन्दोपाध्यायक खण्डहर सन टूटल-फूटल हवेलीमे। मात्र ओकर स्वादे नहि भेटलनि, ओकर रसमे ओ डूबि गेलीह आ ओकर उत्तेजनासँ उद्दीप्त भेलीह।

फूलपुरक लोक जखन सुनलक तँ ठकमूड़ी लागि गेलै। शशितारा कहबौलनि अछि जे परीक विवाह तय भऽ गेलाक बाद ओ चारि-पाँच दिन लेल आबि जयती।

ओना मनुक्ख अधिकांशत: बदलि जाइत अछि।

कखनो दू पाइक मालिक होइत अछि तँ बदलि जाइत अछि, कखनो बहुत निर्धन भऽ जाइत अछि तँ, मुदा शशितारा सन देवीमे एहन परिवर्त्तन! एतेक पतन! मुदा किएक? की कारण अछि एकर पाछू? ई सोचल नहि जा सकैछ, कल्पना नहि कैल जा सकैछ।

मुदा ई परिवर्त्तन कोना? ने तँ ओ अकस्मात् निर्धन भऽ गेलीह अछि आ ने बहुत ऐश्वर्य भेटि गेलनि अछि हुनका। तखन फेर? एहि 'फेर'क जवाब ककरो माथामे नहि आबि रहल छैक।

मुदा सभ देखलक जे परीक विवाहमे शशितारा आमंत्रित अतिथि जकाँ अयली।

लोक सभ रुसि कऽ, दु:खी भऽ कऽ, हुनका अपन-अपन दु:खक, कष्टक बात कहलकनि। सभहक ओ सुनलनि, सुनि कऽ बस मुसकी मारलनि। ककरो संग छोट-छीन मजाको कयलनि। परीक दान-दहेजक सामान सभपर नजरि खिरौलनि, भातिजक लग बैसि लेन-देनक सभ

बात सुनलनि। बस, एतबे। ओना विआहक दिन आगू ठाढ़ भऽ सभकेँ खुऔलनि, पिऔलनि, गामक सभ लोक आयल कि नहि, एकरो पूछा-आछी कयलनि, मुदा एहि काज सभकेँ ओ ऊपरी मोनसँ कयलनि, पहिने जकाँ नहि। हुनक हाव-भावसँ साफ झलकैत छल जे हुनक जड़ि एतय नहि रहलनि, कतहु आओर घसकि गेलनि अछि।

जेना, जोगीक कनियाँ हुनका कानि-कानि कहलकनि- "अहाँ ई तँ नहि कहने छलहुँ जे सभ दिन लेल जा रहल छी, तखन किएक नहि अबैत छलहुँ? की कहू माय, अहाँक गेलाक बाद हमर की-की दुर्गति भेल?"

एहिपर ओ ई नहि कहलथिन जे किएक चिन्ता करैत छी, हम ओतय कोनो सभ दिन रहब।

जखन लड्डू बोसक घर गेली तखन हुनका पहिने जकाँ ध्याने नहि अयलनि जे एहि परिवारकेँ जीवित रखनाइ, एकरा आत्मनिर्भर बनौनाइ हमर कर्त्तव्य अछि।

शशितारा ककरो आश्वासन नहि देलनि, ककरो संतोष नहि बन्हौलनि, मात्र अन्यमनस्क भावसँ लोकक मुट्ठीमे किछु रुपैया राखि देलथिन। हुनका सभकेँ ई जनयबाक प्रयास करैत रहली जे ससुरक हवेलीक मरम्मति करेबाक काज शुरू कऽ ओ कोना फँसि गेलीह अछि। आइ ओ हुकुम नहि चलबैत छथि, अपन काजक चिट्ठा दऽ रहल छथि, एतय नहि रहबाक कारण दऽ रहल छथि। इहो विचित्र बात अछि, नव घटना अछि।

शशिताराक एतेक पैघ अनुपस्थितिसँ फूलपुरक लोकक मोनमे कतेको रंगक बात आयल आ गेल।

बेसी लोकक विचार छनि जे आजुक बेटी-पुतोहु पहिला सन नहि रहल, अपन पैघक मान-मर्यादाक विचार नहि रखैछ। शशितारा बहुत दिनसँ दु:खी छलीह, उपाय नहि भेटैत छलनि, तेँ चुप छलीह। साधारण

तँ छथि नहि जे झगड़ा-झंझटि करथि, बस जहिना मौका भेटलनि, बहाना बना कऽ चलि गेलीह।

किछु लोकक कहब छलनि जे स्वर्गीय अघोर चट्टोपाध्याय पोतीकेँ कोनो निर्धन-कंगालक घर नहि बिआहने छलाह। बिआह तँ पाइवलाक ओतय कैने छलाह। पोतीक कपारमे सुख लिखले नहि छलनि, तँ ओकर की कऽ सकैत छलाह? सम्भवत: एतेक दिनक बाद शशिताराकेँ होश अयलनि अछि जे ओतय हुनकहु किछु हिस्सा छनि से ओकरे देखय-सम्हारय गेलीह अछि।

हिनकर सभहक बातकेँ किछु समयक बाद लोक मानबाक हेतु तैयार नहि भेल। हुनका सभक कहब छलनि जे जँ बँटबारा करबय, हिस्सा लेबय गेलीह अछि, तँ एतेक दिन धरि ओतय की कऽ रहल छथि?

तखन फेर?

अरे, वैह बात अछि, जे पहिल दलक लोक कहि रहल अछि। शशितारा की ओहिना घर छोड़लनि, गाम छोड़लनि? तंग भऽ कऽ छोड़लनि अछि। भतिजपुतोहु सभ आब राजपाट सम्हारय चाहैत छथि, बात-बातपर अपमानित करैत छनि। एकर सबूत? सबूत तँ सभसँ पैघ ई अछि जे शशिताराकेँ एतयसँ गेलाक बाद चट्टोपाध्यायक घरक रंग-ढंग बदलि गेल अछि।

की आब सौंसे गामक लोकमे ई विश्वास रहि गेल अछि जे ई घर हमर अपन अछि? हमर दु:ख-दर्दमे सहाय अछि, हमर आश्रय अछि? की आब बेर-कुबेरमे जकरा मोन हो, एतय आबि बैसि सकैत अछि? अपन दु:ख-गाथा सुना सकैत अछि?

आब ओतय जे जाइत छैक, तकर आदर-सत्कार पहिने सन होइत छैक?

एक समय, बहुत दिनक बात अछि। नन्द बरहीक माय आबि

बैसलि। ओ खयबा लेल पान मँगलक। पान अनबामे, देबामे देरी भऽ गेलैक। फेर की छल! ओहि अपराध लेल ओहि दिन शशितारा भतिजपुतोहुकें से खबरि लेलनि जे बेचारी कानय लागलि। ओ की ओहिना एना कयलनि? ओ एहि लेल एना कयलनि जे कनियाँ-मनियाँ ई नहि बिसरय जे घर आयल पाहुन भगवान सन पूज्य छथि।

मुदा आब? आब ओतय जा कऽ घण्टा भरि ठाढ़ रहलोपर केओ नहि पुछैत अछि।

सभहक मोनमे यैह विश्वास छल जे परीक विवाह पक्का होइते आबि जयती पीसी आ अपन नैहरक करुआरि सम्हारि लेती। मुदा ई की सुनल जा रहल अछि? मात्र चारिए दिन रहती एतय? ओतय जरूरी काज छनि। ओ रुकि नहि सकती।

ई समाद सुनि सभकें आश्चर्य भेलै। ई की? ई केहन समाचार? पूरा जीवन तँ एतय रहली, आब बुढ़ारीमे सासुर अपन भऽ गेलनि? एतेक दिन बाद अहाँकें अपन अपरिचित सड़ल-गलल सासुर एतेक नीक लागि गेल जे फूलपुरकें एकदम बिसरिए गेलहुँ? बिसरि गेलहुँ फूलपुरक माटिकें, ओतुक्का रहयवलाकें? बिसरि गेलहुँ सबकें जे अहाँक प्रतीक्षामे, अहाँपर निर्भर कैने आश लगौने देखि रहल अछि? जे सभ अहाँक स्नेहक छाहरिमे पलि रहल छल, बिसरि गेलहुँ हुनका सभकें?

की एतेक बदलि सकैत छथि शशितारा?

अपन एहि मानसिक परिवर्त्तनसँ शशितारा स्वयं विस्मित छथि। विस्मित होयबाक संग खिन्न सेहो।

की भऽ गेल अछि हमरा? सोचैत रहै छथि ओ। जाहि परिवारमे ओ पोसाइत रहली, बढ़ली, जकरा अपन साँसमे दीर्घ काल धरि संजोगि कऽ रखलनि, जकर एक-एक खढ़कें छातीसँ लगा शेरनी जकाँ पहरेदारी करैत आबि रहल छली, आइ ओकर कोनो व्यक्ति, कोनो वस्तु लेल हुनक

मोनमे कोनो भावना नहि छनि? किएक? किएक? किएक?

आइ हमरा मोनमे ई बात एको बेर किएक नहि आबि रहल अछि जे जाहि गृहस्थीकेँ हम एक-एक खढ़ समेटि कऽ जोड़लहुँ, बढ़ौलहुँ, बनौलहुँ, ओकर ई सभ की गति बना रहल छथि? किएक नहि प्रश्न उठैछ जे की बिगाड़ि रहलीह अछि, की सड़ा रहलीह अछि, की फेकि रहली अछि कनियाँ-बहुरिया सभ?

एहनो तँ नहि जे हमरा ई सभ आब देखबामे नहि अबैत हो। सभ किछु तँ देखिए रहल छी। कतय कड़ी टुटि रहल अछि, कतय की फेका रहल अछि, बर्बाद भऽ रहल अछि, कतय ककर अवहेलना भऽ रहल छैक। हम तँ देखिए रहल छी जे पाहुन लेल राखल गेरुआ-तोसक उतारल गेल अछि, मुदा ओहिपर खोल नहि चढ़ल अछि। लोक बिना चद्दरि ओछौने, बिना खोल लगौने ओकर व्यवहार कऽ रहल छथि। हुनका सभक माथक तेलसँ बिना खोलक गेरुआ सभ लसलस कऽ रहल अछि। हम की एना होबय दितहुँ? विवाहक घर अछि। एतय थारीमे, ओतय तश्तरीमे, अलनापर, कटोरीमे दू-दू, चारि-चारि मधुर पड़ल अछि, माछी भिनकैत अछि, चुट्टी पतिआनी लगौने चलल आबि रहल अछि। एक बेर मोन होइछ जे बजा कऽ उठबय कही, तमसाइ, साफ कराबी, मुदा फेर इच्छा बलवती नहि होइछ। आत्मा गवाही नहि दैछ, ई काज करबा लेल। लगैत अछि जेना हमरा भीतर केओ कहि रहल अछि, मारू गोली। ओ सभ तँ एहिना अपन गृहस्थी करती। दू दिन लेल आबि कऽ हुनका सभकेँ रोक-टोक कऽ हम खराब किएक बनी?

शशितारोकेँ सभ दिनुक अपन, हुनकर एतेक प्रिय फूलपुर आइ हुनके लेल दोसराक भऽ गेलनि अछि।

अपना भीतर आयल परिवर्त्तनकेँ खूब बूझि रहल छथि, खूब चीन्हि रहल छथि शशितारा। बुझती किएक नहि? कुशाग्र बुधियारि छथि

ओ, बहुत संवेदनशील छनि हुनक मोन। अपना भीतर आयल एहि बदलाओकेँ अनुभव कऽ रहल छथि आ सोचि रहल छथि। विवाहक बाद जखन स्त्री पहिल बेर सासुर रहि नैहर अबैत छथि, तँ की एहिना होइत छनि, हुनका सभक मोनमे? सम्भवतः एहिना होइत होयतनि।

अपनहि घरमे देखलनि अछि भतीजीकेँ, भतीजाक बेटी सभकेँ। विवाहक बाद जखन ओ सभ पहिल बेर सासुर रहय जाइत छलीह आ आठ दस दिन रहलाक बाद जखन घुरैत छलीह, तखन हुनका सभमे एकटा विचित्र परिवर्त्तन देखैत अयलीह अछि, शशितारा। पता नहि केहन तँ भऽ जाइत छथि ओ सभ। कोनो काजमे मोन नहि, कोनो वस्तुसँ लगाओ नहि। जतबे कहलहुँ से कैलक, जे नहि कहलहुँ, से नहि कैलक। जेना जड़िए उखड़ि गेल हो ओकरा सभक। ओकरा सभक रंग-ढंग देखि कऽ शशिताराक जी जरि जाइत छलनि।

आइ ओ अपनेसँ पूछि रहल छथि, "की बूढ़ी, ओहि छौंड़ी सभक सनक दशा अहूँक भऽ गेल अछि की? आइ अहूँ अपन चिर-परिचित फूलपुरसँ उखड़ल-उखड़ल सन किअए फिरि रहल छी। की भऽ गेल? अहाँक जड़ि कतय गेल?"

शशितारा उद्विग्न छथि। हुनक कान बैसकी दिस लागल छनि। कखन, कतयसँ समाद आओत।

बेटीक विवाहक बात स्थिर कऽ पैघ भातिज जखन शशिताराकेँ आनऽ वीरनगर गेलाह, तँ औपचारिकतावश रमेश मास्टरकेँ सेहो निमंत्रण-पत्र दऽ अयलाह। कहि आयल छलथिन- "हमरा घर अयबाक कृपा करब। अहाँसँ हमर सम्बन्ध तँ बहुत पुरान अछि, मुदा आयब-जायब नहि अछि, तेँ एहि ठाम कहियो पहिने अयबाक हिम्मति नहि भेल। आब पीसी केबाड़ खोलि देलनि अछि... ।"

ओहि औपचारिक निमंत्रणक सूत्र पकड़ि आइ शशितारा उत्कंठित छथि। ओ आयल कि नहि! अयबापर आदर-सत्कारक कमीसँ आहत भऽ

कहीँ आपस ने भऽ जाय। एतय तँ ओकरा केओ चिन्हैत नहि छैक। भऽ सकैछ जे अज्ञानतावश ओकरा केओ आसनो नहि दिअय, बातो नहि करय।

एही कारणे छोट बच्चाकेँ बेर-बेर बैसकमे पठा रहल छथि। 'देख तँ वीरनगरसँ केओ आयल अछि कि नहि?'

आओर लोककेँ सुनबामे नहि आबि रहल हो, एहन बात नहि। भतिजपुतोहु सभ हँसि रहल छथिन। कहैत छथिन- "सासुरक सम्बन्धी लेल मइयाँ आइ एतेक व्यग्र छथि, जँ बाबा रहितथिन तँ मइयाँ की करितथि?"

भतिजपुतोहु सभ सहमलि छलि। अबितहि फेर सिंहासनपर बैसबाक जिद्द करती। मुदा जखन ओ सभ हुनक निर्लिप्त, निरासक्त रूपकेँ देखलनि, तँ सेहो खराब लगलनि। ओ सभ आपसमे कनफुसकी करैत कहैत छथिन- "देखू ने, ढंग तँ देखू, हमरा सभसँ पूछि-पूछि कऽ काज करैत छथि जेना दूरक कोनो सम्बन्धी होथि। मर बाक बेर आबि गेलनि मुदा नखरा तँ देखू। आओर तँ आओर जे सतौत दियर लेल मरल जा रहल छथि। एतेक लोक आयल छथि, मुदा ककरो लेल हुनका चिन्ता नहि। हुनका एकेटा चिन्ता सतौने छनि, वीरनगरसँ केओ आयल कि नहि?"

बात उचिते अछि। एहन दुरंगी ककरा नीक लगतैक? भतीजो सभकेँ नीक नहि लागि रहल छलनि।

ओ सभ देखि रहल छथि जे पीसीक मोन वीरनगरक मिस्त्री-मजूरमे उलझल छनि। एहिसँ बेसी दुरंगी आओर की भ ऽ सकैत छल?

एतय शशितारा चूकि रहल छथि। एतय हुनक सूक्ष्म दृष्टि पहुँचि पाबि रहल छनि? ओ किछु आओर सोचि रहल छथि। हुनक विचार छनि जे एहन सम्बन्धी जे कहियो नहि अबैछ, से जँ अहाँक दुआरिपर आबथि

आ हुनक ढंगसँ आदर-सत्कार नहि हो तँ, जँ ओ दुःखी भऽ घुरि जाथि, तँ लाज अहाँक थिक। आ हुनका एहि लज्जास्पद स्थितिसँ बचयबाक हेतु ओ एतेक उद्विग्नतासँ दियरक बाट देखि रहल छथि।

शशितारार्कें बूझल नहि छनि जे एहि बीच चोरायल-नुकायल एकटा आओर समाद आयल अछि फूलपुरसँ। आइ धरि एहन कोनो खबरि नहि आयल मुदा लोक कहैत अछि जे आगि आ कलंकक खबरि बसातोसँ आगू पहुँचैत छैक।

ओना गप्प एकदम अविश्वसनीय अछि, एहि हद धरि अविश्वसनीय जे ओकर उपहासे कयल जा सकैत अछि। मुदा बात एहन अछि जे ओकरा बेकार सेहो नहि सिद्ध कैल जा सकैछ। झख मारि कऽ एहन विचित्र बातपर विश्वास करय पड़ैछ। लोक जँ देखय जे वीरनगरक रमेश मास्टर निमंत्रण पाबि कऽ अयलाह कि नहि, एहि लेल शशितारा नव अनुरागिनी राधा जकाँ उद्विग्न भऽ रहल छथि तँ कि हुनका लोक एहि लेल छोड़ि देनि जे हुनक वयस बहत्तर वर्षक छनि?

ओ इहो सुनलनि अछि जे वीरनगरमे सेहो एहि बातपर कनफुसकी चलि रहल छैक। हुनका दुनूमे हँसी-मजाक आ आप्तता देखि सतौत छोट दियादिनी सोचि रहल छथि जे जहर खा ली अथवा फाँसी लगा लटकि जाइ।

सबूत तँ एतय हाथो-हाथ भेटि गेल।

वीरनगरक रमेश मास्टर अयलाह अछि, ई सुनि शशितारा बेसुध भऽ जेना दौड़लनि, से तँ देखिते बनल।

ई केओ सोचब आवश्यक नहि बुझलक जे शशिताराक एहि उद्विग्नताक कारण ई अछि जे जीवन भरि तँ ओ एके घर, एके बाट जनलनि। आब, जीवनक अन्तिम चरणमे हुनक जीवनमे परिवर्त्तन आयल अछि, एकटा आओर केबाड़ फुजल अछि। एकटा बिनु स्वादल रसक स्वाद चिखलनि अछि ओ, एकटा बिना स्वादल मुक्तिक स्वाद ओ

जनलनि अछि। ई केओ नहि सोचैछ, सोचब आवश्यको नहि बुझैछ जे एखन धरि शशिताराक अपन किछु नहि छलनि, नहि छलनि अपन कोनो घर-दुआरि, ने केओ सर-सम्बन्धी। आइ शशिताराकेँ अपन घर भेटलनि अछि, भेटलनि अछि अपन सम्बन्धी। प्रत्येक स्त्रीक जीवन दू परिवार सँ गठित होइत अछि। शशितारा एहि दोसर परिवारकेँ कहियो नहि जनलनि। मुदा प्रकृतिक शाश्वत नियमक अनुसार ओहि दोसर परिवारक लेल हुनका हृदयमे छल अनन्त पिआस, जाहि पिआसक विषयमे शशितारा स्वयं कहियो नहि जानि पौने छलीह।

हिनका सभकेँ नहि बूझल, जखन अजीत वीरनगर गेल छलाह, शशितारा रमेश मास्टरकेँ बजा कऽ कहने छलीह- “भाइ, तोरा एक बेर गणेश हलुआइक दोकान धरि जाय पड़तह। समधियानसँ पाहुन आयल छथुन। अपन मिठाइवलासँ जा कऽ बढ़ियाँ वस्तु लाबह, जल्दी।”

ई सभ इहो बात नहि जनैत छथि जे ओ रमेश मास्टरसँ कहने छलीह- “देखू बौआ, हमर कहब नीक नहि लगैए। अहाँ स्वयं एक बेर नीक जकाँ अजीतकेँ कहियनु जे आइ जयबाक कोन जल्दी अछि? आइ एतहि रहि जाउ।”

अजीत रहल तँ नहि छल मुदा रमेश मास्टर बहुत कहने छलथिन।

एतहु शशितारा ओही ढंगकेँ अपनौलनि। अन्तर मात्र एतबे अछि जे लोक बुझि नहि रहल अछि।

एहि दुनियाँमे लोक जँ लोककेँ बुझैत अथवा कनेको बुझबाक चेष्टा करैत तँ फेर कोनो समस्ये नहि रहि जाइत एहि संसारमे। स्वर्ग भऽ जाइत यैह संसार।

समस्या यैह अछि जे केओ ककरो बुझबाक प्रयास नहि करैछ। गंभीरतामे जा कऽ सोचबाक प्रयासे नहि करैछ जे केओ कोनो काज कोनो विशेष तरीकासँ किएक कयलक, अथवा किएक नहि कयलक।

अलाय-बलाय अविश्वसनीय बातकें लोक बड़ सहजतासँ सत्य मानि लेत मुदा ई कहियो ने करत जे कनेक सोची जे एना किएक भेलैक? एकर आओर की अर्थ भऽ सकैछ?

अथवा आनो कोनो अर्थ निकलि सकैछ कि नहि?

परिणाम ई भेल जे फूलपुरक लोक देखलक जे भातिजक बहुत कहलोपर जखन शशितारा नहि रुकलीह, जखन ओहि अर्द्धपरिचित व्यक्तिक संग चलि गेलीह, एके रिक्शापर बैसि कऽ, तँ ओ सभ राम! राम! करय लगलाह।

एतेक दिन धरि शशिताराक लेल लोकक हृदयमे जे श्रद्धा, प्रेम, आदर पनुगल छल, सभकें उखाड़ि- फेकि ओ सभ कहैत फिरलाह- "स्त्रीक प्रशंसा तखन करबाक चाही, जखन ओकर शव जरि कऽ छाउर भऽ गेल हो।" जँ ई बात सत्य नहि तँ शशितारा जे मृत्युक कनछीपर ठाढ़ छथि, बहत्तर वर्षक वयसमे, सतौत दियरसँ...। राम-राम-राम.! छि:.! नारायण, नारायण.!! ई तँ वैह भेल जे दिन नहाइत-धोइत बीतल आ साँझमे करकटक ढेरीपर खसि पड़लहुँ।

भगवानक कृपा एतबे होइत अछि जे ई बात शशिताराक कान धरि नहि पहुँचैत छनि।

पहुँचबो करैत ई बात, तँ की अन्तर पड़ैत? एहन छोट बातक ओ कहिया परवाहे कयलनि।

घरसँ निकलबामे कनेक बिलम्ब भऽ गेल छलनि, तेँ जखन स्टेशन पहुँचलीह तँ गाड़ी छुटबाक समय भऽ गेल रहनि। कोनो तरहेँ दौड़ि कऽ ओ गाड़ी पकड़लनि। गाड़ीकें छुटितहि शशितारा जोरसँ साँस लेलनि। लगलनि जेना बड़ ब्योंतसँ जेलसँ भागि कऽ अयलीह अछि।

प्रसन्नतासँ पुछलथिन- "हमर एतय अयलाक बाद मिस्त्रीक काज किछु आगू बढ़ल?"

रमेश मास्टर कहलथिन- "की होइत काज? ताक-छेम के करैत?"

"किएक? अहाँ! भरल-पूरल मनुक्ख तँ छीहे।"

"एतेक सामर्थ्य हमरामे रहैत तँ की छल!" रमेश मास्टर कहलथिन।

खिड़कीसँ अबैत रौदसँ कने हटैत शशितारा कहलथिन- "से तँ छैहे। सभ जिम्मेदारी तँ हमर अछि। बिजली विभाग जवाब देलक?"

गाड़ी अकस्मात् रुकैत अछि। हो-हल्लामे रमेश मास्टरक उतारा नहि सुनबामे अबैत छनि। नहि सुनलनि नहि सही, शशिताराक मुँहपर ओहि नहि लागल बिजलीक चकमकी पसरय लगलनि।

शशिताराक विषयमे जे अफवाह उड़ि रहल हो, सम्भवत: से झूठ नहि अछि। वास्तवमे हुनका जीवनमे प्रेम आयल अछि। एहि जीवनक अर्थ, एकर स्वाद ओ कहियो जनने नहि छलीह। बूझल नहि छलनि जे पूर्णता की अछि, कोना अबैत अछि।

मुदा वीरनगरक ओहि खण्डहर सन मकानमे जइतहि अपन मोनमे नुकायल पौतीक जानकारी भेटि गेलनि आ से हाथ लगितहि हुनका लेल जीवनक अर्थ, ओकर परिभाषा बदलि गेल। ओ एहि जीवनसँ एतेक सम्मोहित भेलीह जे एहिसँ हुनका प्रेम भऽ गेलनि। ❑❑❑

आशापूर्णा देवी (1909-1995) बहुमुखी प्रतिभाक धनी, समाज सुधारिका, कला-विशेषज्ञा ओ बंगलाक प्रसिद्ध उपन्यासकारक रूपमे प्रख्यात छथि। हिनक जन्म एकटा रूढ़िवादी बंगाली परिवारमे भेल छलनि। हिनक पिता चित्रकार ओ माता साहित्यप्रेमी गृहिणी रहथिन। कलकत्ता विश्वविद्यालयक भुवन मोहिनी स्वर्ण-पदकसँ अलंकृत आशापूर्णाजी 1976 मे पद्मश्रीसँ विभूषित भेलीह। 1977 मे प्रथम प्रतिश्रुति उपन्यासपर टैगोर तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार एवं 1991 मे साहित्य अकादेमीसँ सम्मानित ई लेखिका अपन रचनाक माध्यमे समाजक विभिन्न पक्षकेँ उजागर कैलनि। खास कऽ स्त्री मोनक वास्तविक पीड़ा, सुख-दुःख आ व्यक्तिगत अन्त:संबंधक जटिलताकेँ पकड़ब, हिनक उपन्यास सभक विशेषता छनि। साहित्यमे उल्लेखनीय योगदानक हेतु हिनका डॉक्टरेटक मानद उपाधिसँ सेहो विभूषित कयल गेल छनि।

कमला चौधरी (1953) मैथिलीक सिद्धहस्त कथा लेखिका, निबंधकार ओ शोध अध्येताक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। महंथ दर्शन दास महिला महाविद्यालय ओ विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुरमे अध्ययन-अध्यापनसँ (1980-2018) सम्पृक्त श्रीमती चौधरीक 'मैथिलीक वेशभूषा प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली' शोध अनुसन्धानक क्षेत्रमे मानक सिद्ध अछि। हिनक कथा विधाक एक गोट संग्रह 'समय संकेत' अभिधानसँ पुस्तकाकार प्रकाशित छनि। हिनका द्वारा सम्पादित-प्रकाशित 'स्वाती' त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका (1984-85) अपन प्रखरता ओ विशिष्टता हेतु निरन्तर मोन पाड़ल जाइत रहल अछि। विश्वविद्यालयक मुखपत्र 'तिरहुत' सेहो हिनक सम्पादन कलासँ प्रशस्ति पओने अछि। मिथिलाञ्चल विकास परिषद, दरभंगा हिनका 'यात्री सम्मान' (2015) सँ समलंकृत कयने छनि।



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

मूल्य : ₹ 200/-



ISBN: 978-93-93135-12-4